1963 60 2023

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

కేంద్రీయ విద్యాలయం కందుకూరు

केन्द्रीय विद्यालय कंदुकुर

KENDRIYA VIDYALAYA KANDUKUR

कृति

विद्यालय ई-पत्रिका

2023-24

PATRONS

Dr. D. MANJUNATH
DEPUTY COMMISSIONER
KVS RO HYDERABAD

Shri T PRABHUDAS
AC KVS RO
HYDERABAD

Shri Ch. PRASAD RAO
AC KVS RO
HYDERABAD

Shri. REJI V R NATH
AC KVS RO
HYDERABAD

Smt.KRISHNAVENI
AC KVS RO
HYDERABAD

SMT G.VIDYADHARI., I.A.S.,
SUB COLLECTOR,
KANDUKUR,
SPSR NELLORE DISTRICT,
ANDHRA PRADESH.

SUB COLLECTORS OFFICE
KANDUKUR

Phone: 08598 223235
Cell : 8886616022
Email : rdokdkr@gmail.com

MESSAGE

As the chairman of VMC KV Kandukur, I extend my warm wishes and congratulations to Shri. Arjun Singh, K.V. Kandukur Principal, teachers and students on publication of *'Vidyalaya e-Patrika'*.

'Vidyalaya e-Patrika' provides a good platform for our young writers to be creative and express themselves. I am confident that the new edition of the e patrika will benefit our children in shaping their overall personality.

Students of today will shape the destiny of their country in the times ahead. It is incumbent upon educators and teachers to mould the students not only educationally but also imbibe in them a strong character and a sense of responsibility so that good students of today are responsible citizens of tomorrow.

I once again extend my warm felicitations to the principal, teachers, staff and the students of Kendriya Vidyalaya, Kandukur on their publication of *'Vidyalaya e-Patrika'* and wish them success in all their future endeavours.

Ms. Vidyadhari, IAS

26.2.24

Sub Collector, Kandukur Town &

Chairman of VMC KV Kandukur

प्राचार्य का संदेश

श्री अर्जुन सिंह
प्राचार्य

विद्यालय में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को उनके प्रारंभिक वर्षों में ज्ञान प्रदान करके और उन मूल्यों को विकसित करके आकार देना है जो उन्हें जीवन में विकल्प चुनने में मदद करेंगे। अध्ययन की आदत, सीखने के प्रेम और सत्य की खोज को लगातार प्रोत्साहित किया गया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अब केवल कागज-पेंसिल परीक्षण द्वारा मापी जाने वाली अंतर्निहित गुणवत्ता के आधार पर नहीं माना जाता है। हम, विद्यालय में, प्रयोगशाला कार्य, परियोजनाओं और गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के प्रत्यक्ष अनुभव को शामिल करते हुए, सीखने के लिए एक अनुप्रयोग आधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रयास करते हैं।केंद्रीय विद्यालय का उद्देश्य एक अच्छे पेशेवर का निर्माण करने के बजाय एक अच्छा नागरिक बनाना है, इसलिए इस देश के योग्य नागरिक बनने के लिए कड़ी मेहनत करें।

स्कूल पत्रिका का प्रत्येक अंक एक मील का पत्थर है जो हमारी वृद्धि को दर्शाता है, हमारी कल्पनाओं को उजागर करता है, और हमारे विचारों और आकांक्षाओं को जीवन देता है। यह रचनात्मक कौशल के व्यापक स्पेक्ट्रम को लिखने से लेकर संपादन तक और यहां तक कि पत्रिका को डिजाइन करने में भी शामिल है। मैं छात्रों, अभिभावकों और संपूर्ण संपादकीय टीम को इस सपने को सच करने के लिए उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि हमारे बच्चों द्वारा प्रदर्शित सकारात्मक दृष्टिकोण, कड़ी मेहनत निरंतर प्रयास और नवीन विचार निश्चित रूप से पाठको के मन को तृप्त करेंगे। विद्यालय के सभी प्रयासों में मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए मैं श्री डॉ डी. मंजुनाथ, उपायुक्त, श्री टी. प्रभुदास, श्री सीएच प्रसाद राव, श्री रेजी वी.आर. नाथ, श्रीमती जी. कृष्णवेणी, सहायक उपायुक्त, हैदराबाद क्षेत्र का आभार व्यक्त करता हूँ। आप सबको पढ़ने की शुभकामनाएं।

हिंदी

जीवन में खेलों का महत्व

-सचिन, शारीरिक शिक्षा अध्यापक

हमारे जीवन में खेलों का काफी बड़ा महत्व हैं। खेल खेलने से हमें कई तरह के लाभ मिलते हैं।खेल व्यक्तिगत लाभ के साथ ही पेशेवर होता है। खेल मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण के लिए अत्यावश्क है।

खेल हमें विभिन्न प्रकार से शिक्षित करते हैं। इससे मानवीय मूल्यों का विकास होता है। साथ ही खेलों दवारा सामूहिक चेतना का भी विकास होता है, क्योंकि खेल की मूल भावना यही होती है। खेल द्वारा नेतृत्व करने की कला का भी विकास होता है। खेल से रचनात्मकता को भी बढावा मिलता है। वर्तमान परिवेश व जीवन शैली में आज मनुष्य जब अनेक रोगों से ग्रस्त हो रहा हैं,ऐसे समय में खेलों का महत्व स्वयमेव स्पष्ट हो जाता हैं। खेल द्वारा न केवल हमारी दिनचर्या नियमित रहती है बल्कि ये उच्च रक्तचाप, ब्लड शुगर, मोटापा, हृदय रोग जैसी बीमारियों की संभावनाओं को भी न्यून रखते है। इसके अलावा खेल द्वारा हमें स्वयं को चुस्त-दुरूस्त रखने में भी मदद मिलती है, जिससे हम अपने दायित्वों का निर्वहन सक्रियता पूर्वक कर पाते है। एक अच्छा जीवन जीने हेतु अच्छे स्वास्थ्य का होना बहुत जरूरी है। आज के समाज में खेल हमें शिक्षा एवं रोजगार प्रदान करने में सहायक है। खेल द्वारा मस्तिष्क का विकास भी होता है। उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि जीवन में खेलों का महत्व निर्विवाद है। ये न केवल जीवन में गति व लय का संचार करते है, परंतु हमें जीवन का महत्वपूर्ण पाठ भी पढाते है। खेल व्यक्ति के कौशल और सोचने की शक्ति में सुधार करता हैं। खेल सदा ही हमारे बीच लोकप्रिय रहे हैं ।

आज के तकनीकी युग में अधिकतर बच्चे खेल में रुचि नहीं रखते है अतः बच्चों को खेल खेलने हेतु प्रेरित करने की आवश्यकता हैं।

प्रोटीन

-विशाल कुमार, टीजीटी जीवविज्ञान

प्रोटीन हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है। हमें अपने तन और मन को शुध्द रखने के लिए शाकाहाररी भोजन को लेना चाहिए।शाकाहारी खाने की कुछ चीजों में भरपूर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। प्रोटीन हमारे शरीर के हर एक भाग के लिए जरूरी होता है। यह हमारी स्किन सेल्स और बॉडी सेल्स के निर्माण में तो मदद करता ही है साथ ही मेमोरी सेव करने और डाइजेशन को दुरूस्त रखने में भी मदद करता है। प्रोटीन हमारे शरीर में मैसेंजर की तरह काम करता है। यह शरीर में आने वाले वायरस और बैक्टीरिया को पहचानने वाले सेल्स के निर्माण से लेकर इम्युनिटि सेल्स के निर्माण तक की क्रिया में शामिल होता हैं। हमें हमारे शरीर की प्रोटीन की जरूरत को पूरा करने के लिए हमारे भोजन में आलू, ब्रोकली, मशरूम, ओटस, पनीर आदि रखना चाहिए।

पुस्तकालय

-कंवल सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष

पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - पुस्तक+आलय अर्थात पुस्तकालय उस स्थान को कहा जाता है जहां पुस्तकों एवं अन्य पाठ्य सामग्रियों जैसे - समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, मानचित्र, शब्दकोश, विश्वकोश, पंचांग आदि का संग्रह विद्यार्थियों के ज्ञानोपार्जन एवं ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया जाता हैं। पुस्तकालय शब्द लैटिन भाषा के शब्द “Liber” से बना है जिसका अर्थ पुस्तक होता है। प्रत्येक पुस्तकालय का आधार पुस्तकें होती हैं। पुस्तकों के अभाव में किसी भी पुस्तकालय की कल्पना भी नहीं कि जा सकती है। पुस्तकालयों में पुस्तकों को भावी पीढ़ी कि उपयोगार्थ संग्रहीत करके रखा जाता है। पुस्तकालय में रखी पुस्तकें ज्ञान का स्रोत होती हैं जिनका अध्ययन कर कोई भी विद्यार्थी अपने जीवन को सरल, सुखद एवं सफल बना सकता है तथा आदर्श समाज कि स्थापना में सहभागी बन सकता है। पुस्तकायल में उपलब्ध पुस्तकें न केवल शैक्षणिक, प्राचीन एवं नवीन ज्ञान का स्रोत होती हैं, अपितु खेलकूद, कहानी, जीवनी, साहित्य, कैरियर मार्गदर्शन एवं मनोरंजन आदि अन्य विषयों पर भी ज्ञान का स्रोत होती है जिन्हे पढ़कर विद्यार्थी अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं तथा फ़ुरसत के समय, समय का सदुपयोग कर सकते है।

आज का युग आधुनिक युग है। इस युग में सूचना एवं प्रोद्योगिकी के आगमन से पुस्तकालयों ने आधुनिक रूप ले लिया हैं। प्राचीन समय में पुस्तकालयों का उपयोग केवल दुर्लभ पुस्तकों को संग्रहीत करने के उद्देश्य मात्र से ही किया जाता था। ये पुस्तकालय केवल धनी एवं समृद्ध वर्गों के अधिकारियों/ व्यक्तियों कि आवश्यकताओं के लिए ही स्थापित किए जाते थे। आधुनिक युग में सूचनाओं के विस्फोट से सूचनाओं कि मांग एवं

उनके उपयोग का स्तर तीव्र गति से बढ़ा है। सूचना के स्तर को बढ़ाने के लिए आधुनिक पुस्तकालय सूचना एवं प्रोद्योगिकी का प्रयोग करते है तथा पाठ्य सामग्रियों को भौतिक रूप में रखने के साथ साथ उनको ई-पठनीय रूप में भी संग्रहीत रखते हैं ताकि ई-पठनीय रूप में संग्रहीत पाठ्य सामग्रियों तक पहुँच को सक्षम इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस (Mobile Phones, Laptop, Desktop Computer etc.) एवं इंटरनेट के माध्यम कहीं भी व कभी भी सरल व सुगम बनाया जा सके।

आज के युग में पुस्तकालयों को किसी भी प्रकार से कम आंका नहीं जाना चाहिए। पुस्तके विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत विकसित करते हैं। उनकी ज्ञान प्राप्ति एवं भविष्य के निर्णयों को लेने में सहायक होते हैं। उनके चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। पुस्तकालय में संग्रहीत पाठ्य सामग्रियों का अध्ययन कर विद्यार्थी अपने क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय स्तर पर स्थापित पुस्तकालय विद्यालय में शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं।

अतः हमारे जीवन में पुस्तकालयों का बहुत बड़ा महत्व हैं। पुस्तकालय हमें एकाग्रता से पढ़ने के लिए शांत एवं अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, मार्गदर्शन प्रदान करते हैं एवं ज्ञान प्राप्ति में सहायक होते हैं। हमें पुस्तकालयों के नियमों का पालन करना चाहिए। हमें पुस्तकालयों कि वृद्धि एवं कल्याण के लिए अधिक से अधिक प्रयास करने चाहिए तथा पुस्तकालय कि गरिमा को बनाए रखना चाहिए।

मेरा जीवन का लक्ष्य

- सुमिया, कक्षा छठी

हर एक मनुष्य को अपने जीवन में कोई न कोई लक्ष्य होता है। उसी तरह मेरा जीवन का लक्ष्य डॉक्टर बनना हैं ताकि में लोगों का उपचार कर सकूँ। मैं डॉक्टर बनकर अपने गाँव में उपचार करना चाहती हूँ जिससे अभी तक मेरा गाँव वंचित है। डॉक्टर बनने का मेरा उद्देश्य पैसा कमाना नहीं है बल्कि मैं लोगों की सहायता करना चाहती हूँ। मैं गरीबों और असहायों का निःशुल्क उपचार करना चाहती हूँ। मैं डॉक्टर बनकर अपने गाँव में अस्पताल खोलना चाहती हूँ, जिसके लिए मैं कड़ी मेहनत करूँगी। मैं डॉक्टर बनकर अपने रोगियों से अच्छा व्यवहार करूँगी और अच्छा उपचार करूँगी। मैं डॉक्टर बनकर लोगों में स्वच्छता और प्राथमिक चिकित्सा रखने के प्रति भी जागरूकता लाऊँगी। मैं एक कुशल डॉक्टर बनकर अपने देश की सेवा करना चाहती हूँ और यही मेरा जीवन का लक्ष्य है।

विद्यार्थी और अनुशासन

- सकीना, कक्षा नौवीं

जीवन में शिक्षा और अनुशासन दोनों आवश्यक हैं। शिक्षा का लक्ष्य है जीवन को सुविधापूर्ण बनाना। अनुशासन का भी यही लक्ष्य है एक तरह से अनुशासन भी एक प्रकार की शिक्षा है। अपनी बोल-चाल, रहन-सहन, सोच-विचार और व्यवहार को व्यक्त करना ही अनुशासन है। विद्यार्थी के लिए अनुशासित होना आवश्यक है। अनुशासन से समय और धन की बचत होती है। जिस छात्र ने अपनी दिनचर्या निश्चित करली है, उसका समय व्यर्थ नहीं जाता। वह समय पर मनोरंजन भी कर लेता है तथा अध्ययन भी पूरा कर पाता है। इसके विपरीत अनुशासनहीन छात्र आज का काम कल पर और कल का काम परसों पर टाल कर अपने लिए मुसीबत मोल लेते है। अनुशासन का गुण बचपन में ही ग्रहण किया जाना चाहिए, इसलिए इसका संबंध छात्र से है। विद्यालय की सारी व्यवस्था में अनुशासन और नियमों को लागू करने के पीछे यही बात है। यही कारण है कि अच्छे अनुशासित विद्यालयों के छात्र जीवन में अच्छी सफलता प्राप्त करते है। अतः अनुशासन जीवन के लिए परमावश्यक है।

मेरा प्रिय खेल

-कृष्ण चैतन्या, कक्षा, पाँचवी

खेल जैसे हॉकी, बैडमिंटन, फुटबॉल, क्रिकेट कबड्डी, आदि सभी खेलों में मुझे दिलचस्पी है किंतु इन तमाम खेलों में क्रिकेट का खेल मुझे अधिक प्रिय है। क्रिकेट के लिए मैं दिवाना हूँ। आज सारा विश्व क्रिकेट को खेलों का राजा मानता है। क्रिकेट ने लोगों के दिलों को जीत लिया है। क्रिकेट का नाम सुनते ही लोग उसे देखने के लिए अधीर हो उठते हैं। जो लोग मैच देखने नहीं जा सकते वे

टी.वी पर उसे देखना या रेडियों पर उसकी कमेंटरी सुनना नहीं चूकते। समाचार पत्रों के पन्ने क्रिकेट के समाचारों से भरे होते हैं। सचमुच क्रिकेट एक अनोखा खेल है।

मैं प्रतिदिन शाम को अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलता हूँ। क्रिकेट के विविध मैच मैं अवश्य देखता हूँ। मैं अपने फुरसत के समय क्रिकेट संबंधी पत्रिकाएँ पढता हूँ। समाचार पत्रों में प्रकाशित क्रिकेट संबंधी लेख एवं चित्रों का मैंने अच्छा खासा संग्रह तैयार किया है। क्रिकेट के सभी प्रसिध्द खिलाडियों के चित्र मेरे एल्बम में है। सचमुच क्रिकेट का नाम सुनते ही मैं खुशी से उछल पड़ता हूँ। क्रिकेट के खेल से अच्छा व्यायाम हो जाता है। इससे शरीर फुर्तीला बना रहता है। आज मुझ में शारीरिक शक्ति और मानसिक क्षमता है, उसमें क्रिकेट का महत्वपूर्ण योगदान है। मैं इस खेल का बहुत ऋणी हूँ। क्रिकेट को अपना सर्वाधिक प्रिय खेल बनाकर मैं इस ऋण को उतारना चाहता हूँ। क्रिकेट का खेल सहनशीलता बढ़ाता है। क्रिकेट के खेल से शरीर में फुर्ती आती है। शरीर स्वस्थ और तंदुरुस्त रहता है।

मेरा प्यारा भारत

- जी रित्विक, कक्षा पाँचवी

भारत विशाल भौगोलिक विस्तार वाला देश है। उत्तर में यह ऊँचे हिमालय से घिरा है। पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में हिंद महासागर है। भारत का क्षेत्रफल लगभग 3.28 मिलियन वर्ग किलोमीटर है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक उत्तर दक्षिण की सीमा लगभग तीन हजार दो सौ किलोमीटर हैं और अरूणाचल प्रदेश से कच्छ तक पूर्व पश्चिम की सीमा लगभग दो हजार नौ सौ किलोमीटर हैं। ऊँचे पहाड़, महान भारतीय रेगिस्तान, उत्तरी मैदान, असमान पटरी सतह और तट और द्वीप विविध प्रकार की भू-आकृतियाँ स्थित हैं। जलवायु, वनस्पति, वन्यजीव के साथ-साथ भाषा और संस्कृति में भी बहुत विविधता हैं। इस विविधता में हम एकता पाते है, जो उन परंपराओं में परिलक्षित होती है जो हमें एक राष्ट्र के रूप में बाँधती हैं। वर्ष 2011 से भारत की जनसंख्या 120 करोड़ से अधिक हैं।

मेरा विद्यालय

-डी. चरीश, कक्षा पाँचवी

मेरा विद्यालय का नाम केन्द्रीय विद्यालय कन्दुकुर है। यह कन्दुकुर नगर के बीचों-बीच, मुख्य डाकघर के पास स्थित है। इसकी स्थापना 21 अगस्त 2019 को हुई। वर्तमान में यहाँ कक्षा 1 से 9 तक कक्षाएं संचालित है। मेरे विद्यालय में कुल 337 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत है। मेरे विद्यालय का प्रांगण हरा भरा एवं स्वच्छ हैं। मेरे विद्यालय में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां, प्रतियोगिताएं एवं खेलकूद आयोजित किये जाते हैं। मेरे विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं बहुत ही सहज भाव के साथ पढ़ाते हैं तथा किसी भी समस्या का समाधान आसानी से कर देते है। मेरे विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता हैं। मेरे विद्यालय के प्राचार्य तथा शिक्षक हमारे मार्गदर्शक है तथा हमें सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। अतः मैं अपने विद्यालय से बहुत प्रेम करता हूँ।

महात्मा गाँधी

-पी. निस्सी, पाँचवी कक्षा

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। इनके पिता का नाम करमचंद गाँधी था माता का नाम पुतली बाई था। महात्मा गाँधी को ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेता और राष्ट्रपिता माना जाता है. महात्मा गाँधी के पूर्व भी शांति और अहिंसा के बारे में लोग जानते थे, परंतु अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। इसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता, तभी तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 से गाँधी जयंती को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की है।

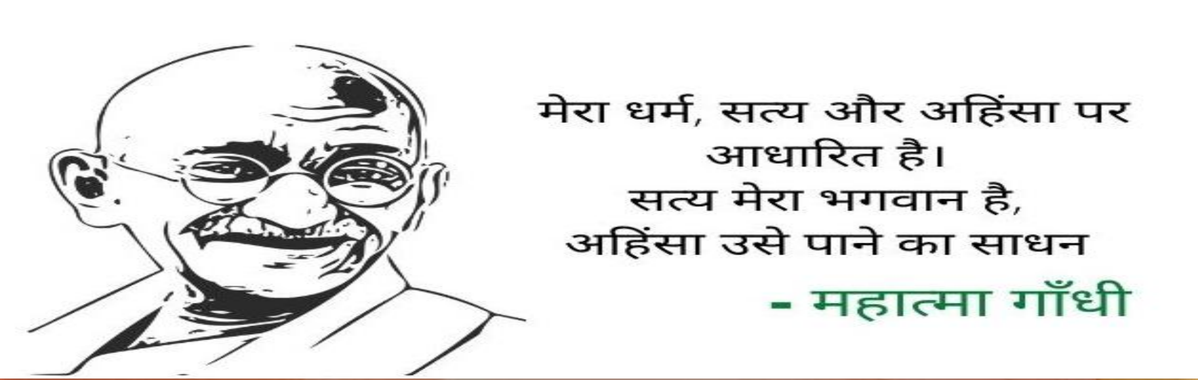

प्रकृति का जादु

-के.वी. साई महेश्वर

प्रकृति हमें शांति और संतुलन प्रदान करती है। प्रकृति हमें जीवन के चक्र की याद दिलाती है। प्रकृति हमें जिम्मेदारी सिखाती है- उसके संसाधनों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। पहाड़ो की महानता, नदियों का कलकल बहना, झरनों का झिलमिलाता पानी, वनों का हरापन, फूलों के रंग-प्रकृति हर रूप में मनमोहक हैं। सूर्योदय की सुनहरी आभा, सूर्यास्त के रंग, तारों से जगमगाता आकाश - प्रकृति हमें विस्मय में डालती है। पक्षियों के मधुर गीत, पत्तियों की सरसराहट, कीड़ो का गुंजन, प्रकृति के संगीत में हमारा मन शांत हो जाता हैं। प्रकृति हमें जीवित रहने के लिए आवश्यक सभी संसाधन हवा, पानी, मिट्टी, धूप प्रदान करती हैं। प्रकृति हमें वनस्पति, फल-फूल, भोजन देती है। पशु-पक्षी, नदियों के जीव- प्रकृति हमें पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन दिखाती है।

वनों का महत्व

-शेख़ अप्शा, कक्षा सातवीं

प्रकृति जीवनदायिनी है। वन हमारे लिए और इस दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। वन हमें ऑक्सीजन देते है, इसके कारण ही तो हम साँस लेते है। वन लकड़ी-कोयला, गोंद, कागज आदि देते हैं, इतना ही नहीं वन हमें भोजन, फल, फूल, औषधियाँ, जड़ी बूटिया, रबर, तेल और बहुत सारे चीज देते हैं। वन हर प्रकार से मानव-जीवन का संरक्षण करते है। वनों का महत्वपूर्ण काम है-वर्षा लाना, बाढ़ रोकना और वातावरण को शुध्द रखना। वनों के अभाव में धरती सूख जाने का खतरा है। वन अत्यधिक मात्र में ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इसी ऑक्सीजन के द्वारा हमारा जीवन चलता है। वनों से पशु-पक्षी भी सुरक्षित रहते हैं। इसलिए वनों को काटना नहीं चाहिए और जब पेड़ काटना हो तो एक पेड़ को काटे और दूसरा पेड़ अवश्य लगाना चाहिए। यदि वन नहीं होंगे तो मानवता खतरे में पड़ जाएगी, अतः हमें वनों का संरक्षण करना चाहिए।

किसान

-आईशा बानु, कक्षा छठी

किसान का जीवन बहुत कठिन है। वह अपने खेतों में लम्बे समय तक कार्य करता है। वह कठोर मौसम की परवाह किये बिना कार्य करता है। चाहे सर्दी हो या गर्मी या फिर चाहे बारिश ही हो रही हो, उसका ध्यान अपनी फसल में ही लगा रहता है। किसान बहुत गरीब व निर्धन होते हैं तथा अपनी मेहनत के बल पर वे केवल अपना जीवन ही व्यतीत कर पाते हैं। हालांकि कृषि की नवीव तकनीकों ने किसान की बहुत मदद की है, पर इस उपलब्धि का लाभ एक छोटा और निर्धन किसान नहीं उठा पाता है क्योंकि वह अपने खेतों को उपजाऊ बनाने के लिए पर्याप्त औजार भी नहीं खरीद पाता। हम किसान के बारे में तभी सोचते हैं जब सूखा पड़ता है या अनाज की कमी होती है। वास्तव में भोजन हर व्यक्ति की जरुरत है। कोई भी बिना अन्न के जीवित नहीं रह सकता है। इस प्रकार किसान हमारा अन्नदाता है। इसलिए हम सभी को किसानों का सम्मान करना चाहिए व उसके कार्य को महत्त्व देना चाहिए। वह कठिन परिश्रम, सादगी और सत्यता का उदाहरण है। हमें उसके जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

चंदा मामा

- बी. सीमा मेहराज, कक्षा छठी

चंदा मामा आ जाना

साथ मुझे ले जाना,

कल से मेरी छुट्टी है

ना आये तो कट्टी है

चंदा मामा खाते लड्डू

आसमान की थाली में

लेकिन वे पीते पानी

आकर मेरी प्याली में।

थपकी दे-दे कर जब अम्मा

मुझे सुलाती रात में

सो जाती चंदा मामा से,

करती -करती बात मैं।

पुस्तक- एक सच्ची मित्र

- जी. शांति प्रिया, कक्षा आठवीं

पुस्तक हमारी सच्ची मित्र है। पुस्तक हमें अच्छी बातें सिखाती है। अपना कोई दोस्त आपका साथ छोड़ सकता है, परन्तु पुस्तके कभी हमारा साथ नहीं छोड़ती। दुख में सुख में हंसी-खुशी सभी में पुस्तके एक सच्ची मित्र बनकर हमारा साथ निभाती हैं। पुस्तक ज्ञान प्रदान करती है। पुस्तक हमारी सच्ची दोस्त और हमारी मार्गदर्शक कहलाती हैं। पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं और इनके साथ आप जीवन में कई परिवर्तन ला सकते है। पुस्तकें आपको हँसा सकती हैं, तो वह कुछ अपनी रोचक कहानियों के साथ आपको रूला भी सकती हैं। 1455 में पहली पुस्तक छपी जो बाइबिल थी। आज कल पुस्तक कई प्रकार से मिलने लगी हैं, जैसे की ऑनलाइन और ऑफलाइन।

जीवन के उध्देश्य प्राप्त करने के लिए पुस्तके हमेशा सहायक सिध्द होती है। छात्र पुस्तकों के माध्यम से अनेक नई जानकारी, नए विचार, नए तथ्य और नई शब्दावली सीख सकते हैं।

जय जवान जय किसान

-अस्मा कौसर, कक्षा आठवीं

देश किसान और जवान के बिना अधूरा है।

ये दोनों कभी किसी की जाति नहीं पूछते

हर वक्त देश, देश वासियों के लिए काम करते है

वे राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देते है

इनके मेहनत के बिना न जाने हमारी जिंदगी कैसी होगी

अपना परिवार, बच्चे, माता-पिता, दोस्त, सब को छोड़कर

वे निःस्वार्थ भाव से देश की रक्षा करते है।

किसान ठण्ड व बरसात में अपने खेत में मेहनत करते है

तथा प्यार से अपनी फसल की देखभाल करते हुए

पुरे देश के लिए अनाज उगाते है, इसीलिए कहती हूँ शान से

जय जवान जय किसान।

प्रकृति

- डी. रिथि, कक्षा छठी

प्रकृति भगवान का वरदान है।
प्रकृति मानव का आधार है।।
प्रकृति जीव-जंतुओं का आवास है।
प्रकृति पशु-पक्षियों का निवास है।।
प्रकृति से हम प्रेम करें।
प्रकृति की हम रक्षा करें।।
प्रकृति ने हमें नदी दिए तालाब दिए।
प्रकृति ने हमें पेड़ दिए पर्वत दिए।।
प्रकृति ने हमें सागर दिए समुद्र दिए।
प्रकृति ने हमें कई रंग दिए आनंद दिए।।
प्रकृति ने हमें नई उमंग दी जीवन दान दिए
आओ मिलकर करे प्रतिज्ञा
प्रकृति को स्वच्छ और साफ रखें हम।

मेरी माँ

-शेख. मिस्बा तबस्सुम, कक्षा- पहली

सबसे अच्छी सबसे न्यारी

मेरी माँ कितनी प्यारी

खेल खिलाती, दूध पिलाती

नये खिलोने मुझे दिलाती।

मुझे पकड़ने कोई आता,

तो मै गोद में छिप जाती

रोज सुनाती मुझे कहानी

कभी न करती आनाकानी।

इस दुनिया में सबसे न्यारी,

मेरी माँ तू कितनी प्यारी।

मेरी प्रिय अध्यापिका

-एस. डी नहिद, कक्षा- पहली

मेरी प्रिय अध्यापिका का नाम माधवी है। वह स्वभाव से बहुत ही नम्र और दयालु है। वह हमें हिन्दी पढ़ाती है। उनके पढ़ाने का ढंग बहुत अच्छा है। वह बहुत ईमानदार और मेहनती है। बहुत सरल भाषा में पढ़ाती है। वह एक आदर्श अध्यापिका है। वह पढ़ाई के साथ-साथ हमें जीवन की सीख भी देती है। वह अनुशासन प्रिय है। वह बहुत अच्छा गाती है, हमें सिखाती भी है, इतना ही नहीं हमे हावभाव के साथ पाठ पढाती है। हमारे साथ खेलती भी है। इसलिए मुझे माधवी मेम पसंद है। मैं हमेशा उनका आदर करता हूँ। मैं भी बड़ा होकर अध्यापक बनूँगा ।

मेहनत का फल

- जसविक,कक्षा -5

कुछ भी हो या कोई कुछ भी कहे पर मेहनत का फल जरूर मीठा होता है। मेहनत एक ऐसा हथियार है जिसकी सहायता से मनुष्य आलस्य रूपी दुश्मन को मार कर अपनी सफलता का मार्ग आसान बना सकता है। इस संसार में बिना मेहनत के कुछ भी नहीं प्राप्त हो सकता। मेहनत के ही द्वारा मुनष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। एक परिश्रमी व्यक्ति में दृढ़ निश्चय, दृढ़ संकल्प, प्रतिबद्धता, धैर्य एवं रचनात्मकता जैसे गुण होने चाहिए। अब उदाहरण अपने ही देश भारत का ले लें, यहां व्यावहारिक रूप से तो लोग भाग्यवादी हैं लेकिन हमारे पौराणिक ग्रंथों विशेषकर गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए बोलते हैं कि, "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि" अर्थात् हे अर्जुन आप कर्म करो क्योंकि आपका अधिकार कर्म पर है, फल पर नहीं है, अतः आप केवल कर्म करो फल की चिंता न करो। इस श्लोक से साफ पता चलता है कि हमारे पौराणिक ग्रंथ हमको कर्म करने की शिक्षा देते हैं, भाग्यवादी या फलवादी बनने की शिक्षा नहीं देते हैं।

- रेखा टी. जी.टी(सा.विज्ञान)

कभी हँसाती, कभी रूलाती जिंदगी
हर पल कुछ नया सिखाती जिंदगी
कभी अपनों से मिलवाती, दूसरे ही पल
पिछडने का गम दे जाती जिंदगी
सोचा अब सीख चुकी हूँ, लेकिन
अगले ही पल नया सबक सिखाती जिंदगी
कठिन राहो पर चलना सिखाती जिंदगी
जीने की कला के सब कलाकार है, लेकिन
कलाकार को और उत्कृष्ट बनाती जिंदगी
कभी उलझनों को बढ़ाती, कभी पल-पल
सुलझाती जिंदगी
आसान नहीं है जिंदा रहना, कभी-कभी
यह अहसास करवाती जिंदगी।
गिरकर उठना, उठकर गिरना और फिर से
संभलना सिखाती जिंदगी
कभी हँसाती कभी रूलाती जिंदगी

आन्ध्र प्रदेश

-मोहम्मद इब्रहीम (पी.आर.टी)

आन्ध्र प्रदेश भारत के दक्षिण-पूर्वी तट पर स्थित राज्य है। क्षेत्र के अनुसार यह भारत का सातवां सबसे बड़ा और जनसंख्या की दृष्टि से पाँचवा सबसे बड़ा राज्य है। उत्तर में छत्तीसगढ़ और उड़ीसा, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण में तमिलनाडु और पश्चिम में कर्नाटक से घिरा हुआ हैं। ऐतिहासिक रूप से आन्ध्र प्रदेश को भारत का धान का कटोरा कहा जाता है। इस राज्य में दो प्रमुख नदियाँ, गोदावरी और कृष्णा बहती हैं।

आन्ध्र प्रदे श का गठन 1 नवंबर 1956 को हुआ। फरवरी 2014 को भारतीय संसद ने अलग तेलंगाना राज्य को मंजूरी दे दी। आन्ध्र प्रदेश का विभाजन होने के बाद इस में दो क्षेत्र विभाजित रूप से हैं, तटीय आन्ध्र और रायलसीमा। काकिनाडा, गुंटूर, तिरूपति, राजमुंद्री, नेल्लूर, ओंगोल, कर्नूल, अनंतपुर और एलूरू सहित आन्ध्र प्रदेश में कुल 26 जिले हैं। कुल 31 शहर हैं जिनमें 17 नगर निगम और 79 नगर पालिकाएँ शामिल हैं।

राज्य की आधिकारिक भाषा तेलुगु है, जो 90 प्रतिशत जनसंख्या द्वारा बोली जाती हैं। भारत की अत्यधिक बोली जाने वाली भाषाओं में तेलुगू का चौथा स्थान हैं। भारत सरकार ने 1 नवंबर 2008 को एक शास्त्रीय और प्राचीन भाषा के रूप में तेलुगू को नामित किया।

राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए आय का मुख्य स्रोत कृषि रही है। चावल, गन्ना, कपास मिर्ची, आम और तम्बाकू स्थानीय फसल है। आन्ध्र प्रदेश एक खनिज समृध्द राज्य है, जो खनिज संपदा के मामले में भारत में दूसरे स्थान पर है। भारत के चूना पत्थर भंडार का एक तिहाई इस राज्य में है। कृष्णा गोदावरी घाटी में प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम के विशाल भंड़ार हैं। राज्य, कोयले के भंड़ार

की बड़ी राशि से भी समृध्द हैं।

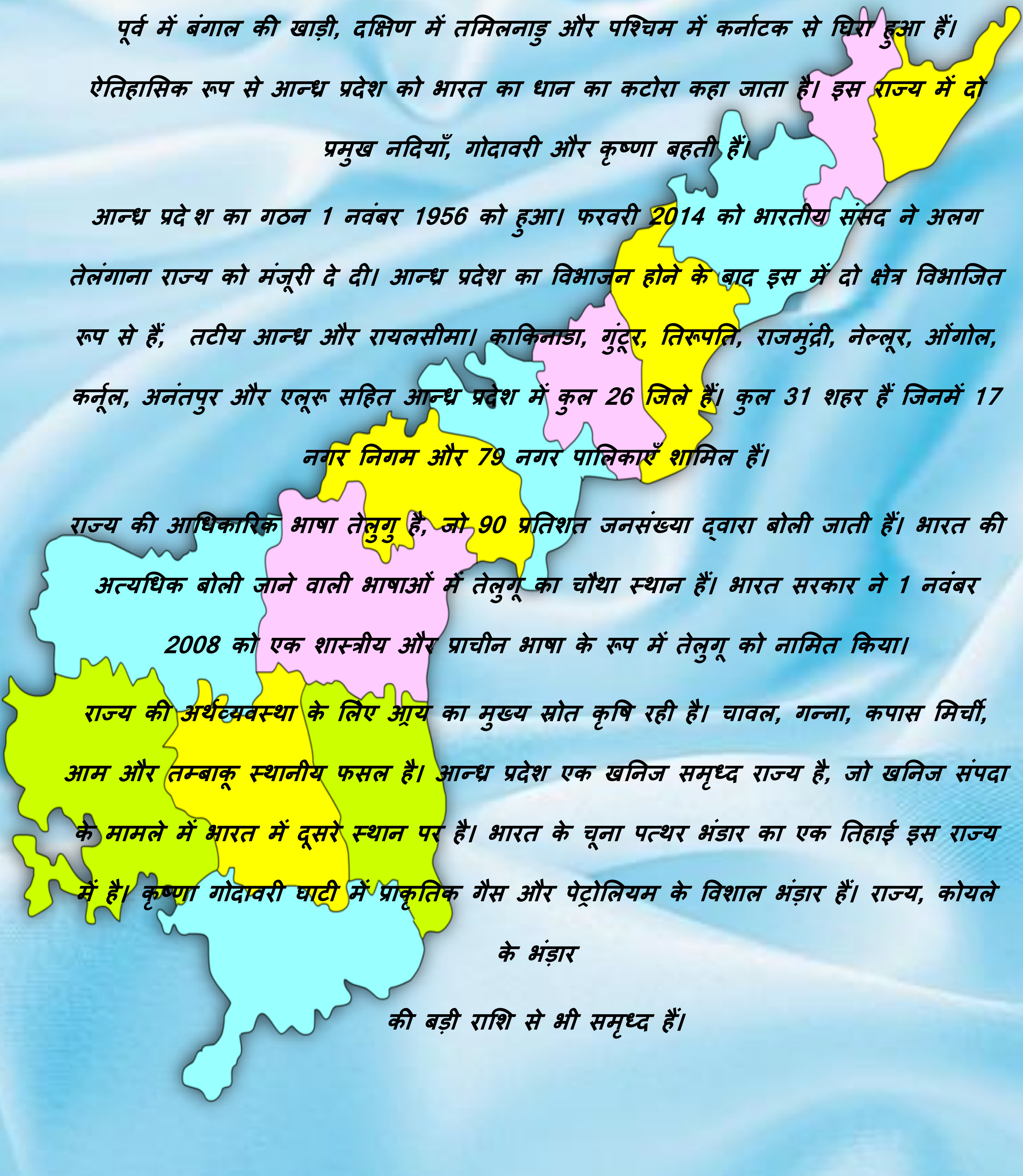

शिक्षा और समाज

-डॉ. हबीब शेख़, टी.जी.टी (हिन्दी)

मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा मनुष्य को पशु से ऊपर उठाने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का मूल अर्थ यही है कि वह व्यक्ति का उचित मार्गदर्शन करे। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञानवान बनाती है। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर सांसारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से युक्त होता हैं। इस ज्ञान से उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। वह ज्ञान-विज्ञान के उन क्षेत्रों में महारत हासिल करता है जो उसके भावी जीवन को सुख शांति और धन-संपत्ति से भर देता है। वह मानव समाज के लिए ऐसे-ऐसे कार्य करने में सक्षम होता है जिससे मानवता सम्मानित होती है। शिक्षा मनुष्य को दुर्गुणों की पहचान में मदद करती है ताकि वह इनसे सदा ही दूरी बनाए रख सके। शिक्षा वास्तविक अर्थों में मनुष्य को जीवन जीना सिखाती है।

शिक्षा व्यक्ति को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का जीवन योग्य बनता है। व्यक्ति और समाज में जो कुछ भी विकास है, वह शिक्षा के द्वारा ही हुआ है। शिक्षा की कमी के कारण समाज में अपूर्णताएं दिखायी देती है। राष्ट्र की उन्नति भी शिक्षा प्रणाली पर आधारित है। प्राचीन काल में शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था का भार गुरु पर रहा है।

शिक्षा मनुष्य के अंदर अच्छे विचारों को भरती है और अंदर प्रविष्ट बुरे विचारों को निकाल बाहर करती हैं । शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाती है। यह मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है। इससे मनुष्य के अंदर मनुष्यता आती है। इसके माध्यम से मानव समुदाय में अच्छे संस्कार डालने में पर्याप्त मदद

मिलती है।शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य का जन्म शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है। इस उद्देश्य के समर्थक व्यक्ति की अपेक्षा समाज को ऊँचा मानते हैं। उनका अटल विश्वास है कि व्यक्ति स्वभाव से सामाजिक प्राणी है। यदि उसे समाज से पृथक कर दिया जाये तो उसका जिंदा रहना कठिन हो जायेगा। प्रत्येक बालक समाज में ही जन्म लेता है तथा समाज में ही उसका पालन-पोषण होता है। समाज में ही रहते हुए वह बोलना-चलना, पढ़ना-लिखना तथा दूसरे व्यक्तियों से व्यवहार करना सीखता हैं। समाज में ही रहते हुए उसकी विभिन्न आवश्यकतायें पूरी होती हैं तथा विभिन्न विचारों के आदान-प्रदान द्वारा उसके व्यक्तित्व का विकास होता हैं समाज की उन्नति से वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करता हैं तथा समाज की हानि से उसे भी क्षति पहुँचती है। इस प्रकार अपने सम्पूर्ण विकास के लिए वह समाज का ऋणी है। इस ऋण को चुकाना उसका कर्त्तव्य है ।

शिक्षा मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह मनुष्य को समाज में अलग पहचान दिलाती है। इससे मनुष्य के अंदर मनुष्यता आती है। इसके माध्यम से मानव समुदाय में अच्छे संस्कार डालने में पर्याप्त मदद मिलती हैं। अशिक्षित मनुष्य भी पशुतुल्य होता है। वह सही निर्णय लेने में समर्थ नहीं होता है। लेकिन जब वह शिक्षा प्राप्त कर लेता है तो उसकी ज्ञानचक्षु खुल जाती है। तब वह प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करता है। उसके अंदर जितने प्रकार की उलझनें होती हैं, उन्हें वह दूर कर पाने में सक्षम होता हैं। शिक्षा और समाज का सिर्फ नजदीकी संबंध नहीं है बल्कि समाज पर आधारित शिक्षा का निर्माण होता है। इस आधुनिक युग में शिक्षा और समाज के पारस्परिक संबंधों को देखने की आवश्यकता हैं। समाज व्यापक बनता जा रहा है और इसी व्यापक समाज की दृष्टि से शिक्षा का विचार करना चाहिय। शिक्षा को जन-जन तक फैलाने के लिए तीव्र प्रयासों की आवश्यकता हैं।

मैं हिन्दुस्तानी हूँ

- डॉ.हबीब शेख़ टी.जी.टी(हिन्दी)

मैं हिन्दुस्तानी हूँ

माथा टेकती हूँ मंदिर में, सजदे में सर झुकाती हूँ ।

मैं रमजान में रोज़ा रखती हूँ

दीवाली में दिया जलाती हूँ

मैं भारत की वासी हूँ, मैं हिन्दुस्तानी हूँ ।

मेरे लिए हर धर्म एवं रीति-रिवाज एक समान है

कुरान बाइबिल और भागवद्गीता का सार एक समान हैं।

मैं मनुष्य में भगवान को ढूंढती हूँ

हिमायती को फ़रिश्ता मानती हूँ ।

मैं भारत की वासी हूँ, मैं हिन्दुस्तानी हूँ

मैं झुकाती हूँ सर उस भगवान के आगे जिसने

मनुष्य के रूप में की सेवा अनेक अभागों की ।

मन में भरोसा चेहरे पर मुस्कान लिए घूमती हूँ हर बार

भीड़ में भी जोड़ती हूँ हाथ अनजान मददगार की

मैं भारत की वासी हूँ, मैं हिन्दुस्तानी हूँ ।

जब भूख लगेगी तो नज़र भोजन की तरफ होती है,

देखती नहीं किस जाति का व्यक्ति परोस रहा है

जब मुसीबत में हो तो नज़र हाथ की तरफ होती है ,

देखती नहीं किस के माथे पर टीका या सिर पर टोपी है ।

मैं भारत की वासी हूँ, मैं हिन्दुस्तानी हूँ।

कुछ बनाना सीखे

-आहिल, कक्षा- नौवीं

भारत में कठपुतली का इतिहास प्राचीन काल से है। हमारे देश में कठपुतली के लिए राजस्थान प्रसिध्द है। कठपुतली एक कला ही नहीं बल्की इससे हम लोगों को शिक्षित भी कर सकते है। कठपुतलिया विविध प्रकार की होती है। कठपुतली को बनाना बहुत आसान है। इसमें हम अपनी मर्जी के आकार की कठपुतलियाँ बना सकते है, अपनी पसंद के रंगों को डाल सकते हैं इतना ही नहीं इसको बनाना भी बहुत आसान है।

चलिए अब हम कठपुतली को बनाएँगे।

कठपुतली बनाने के लिए हमें चाहिए- रूई, कपड़ा, लकडी, मार्कर,सजावट का सामान

बनाने की विधि- 1. सिर और शरीर बनाने के लिए रूई को कपडें के अंदर रखे और रबर बैंड से बाँध कर सिर का आकार लाए।

1. हाथ बनाने के लिए लकड़ी को सिर के नीचे की ओर रखें रबर बैंड से बांधे। अब सिर का भाग और हाथ तैयार हो गए।

2. शरीर का आकार लाने के लिए बीच वाले हिस्से को रबर बैंड से बांधे। अब सिर, हाथ, शरीर तैयार हो गए।

3. अब हम कठपुतली के लिए रंग बिरंगे कपड़ो से पोशाक बनाकर पहनाए।

4. मार्कर की सहायता से आँख, नाक, होंठ बनाइए और बिंदी से सजाकर, घूँघट को उठाकर देखे कि आप की कठपुतली कितनी सुंदर है।

5. अंत में हाथों पर धागा लगाकर अपनी पसंद का गाना गाते हुए नचाइये ।

मेरा प्रिय मित्र

- एम. मोक्षित, कक्षा छठी

जीवन में सच्चा मित्र मिलना किसी खजाने से कम नहीं है। मेरे भी अनेक मित्र हैं, परंतु चरण मेरा सच्चा और प्रिय मित्र है। मुझे उसकी मित्रता पर गर्व है। चरण के पिता एक अध्यापक हैं एवं माँ गृहिणी हैं। चरण एक अनुशासन प्रिय बालक है। वह अपने माता-पिता की प्रत्येक बात को मानता है। चरण और मैं एक ही कक्षा में पढते हैं। वह मेरे पड़ोस में ही रहता है। हम दोनों एक साथ ही विद्यालय जाते हैं। वह हमेशा मन लगाकर पढ़ाई करता है। सभी शिक्षक उससे सदैव प्रसन्न रहते है। वह पढ़ाई में बहुत अच्छा है। वह हर वर्ष परीक्षा में अस्सी प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करता है। वह बड़ा होकर आइ.ए.एस बनना चाहता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह बड़ा होकर अपना लक्ष्य प्राप्त करेगा। वह सदैव मधुर बोलता है। वह स्वभाव से बहुत अच्छा है। विनम्रता उसका गुण है। वह सदैव बड़ों का आदर करता है। पढ़ाई के अलावा खेल कूद में भी वह आगे रहता है। मैं चाहता हूँ कि हमारी मित्रता सदैव बनी रहे। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे चरण जैसा मित्र मिला है।

मेरी पहली रेल यात्रा

- अविनाश, कक्षा पाँचवी

एक स्थान से दूसरे पर जाना यात्रा कहलाता है। यात्रा करना तो बहुत से लोगों की एक पसंद है। यात्रा के अनेक साधनों में से रेलयात्रा का अनुभव एक अनोखा रोमांच एवं अनुभव प्रदान करता हैं। मैंने बचपन से ही बहुत रेल य़ात्राएं की है, लेकिन मेरी पहली रेल यात्रा सिंगरायकोंडा से चिराला तक की रही। मैंने अपने परिवार के साथ रेलगाडी में खिडकी किनारे अपना सीट आरक्षित की थी। रेल की यात्रा इतनी सुखद थी कि मैं रास्ते में पेड-पौधों, घरों और खुले आसमान को देखकर खो गया। यात्रा के दौरान हमने गरमा-गरम समोसे खाये तथा अन्य कई स्वादिष्ट नास्ते किए। हम सब चिराला पहुँचने ही वाले थे कि बारिश शुरू हो गई। रेलगाड़ी से बारिश का दृशय मनमोहक लग रहा था। जैसे ही हम चिराला पहुँचे, तब तक बारिश रुक चुकी थी। हम सब आराम से निकले और उस बच्ची को भी अलविदा कहा जो हमारे साथ ही रेल में बैठी थी। रेल की यात्रा हमारे मन को और जीवन को नया अनुभव देती हैं। हमे नए-नए लोगों से मिलाती है,नए नजारों को देखते है, जो हमें जीवन के एक अलग दृष्टिकोण से परिचित कराती हैं।

समय का महत्व

-प्रजय, कक्षा छठीं

"आयुष: क्षण एकोपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते।नीयते तद् वृथा येन प्रमाद: सुमहानहो" ॥

अर्थात - सारे रत्न देने के बाद भी जीवन का एक क्षण भी वापस नहीं आता। जो लोग जीवन के इन अनमोल पलों को बेवजह बर्बाद कर देते हैं।

वे कितनी बड़ी गलती कर रहे हैं।

हमारे लिए सबसे कीमती वस्तु समय है। जिसने हमारे जीवन में प्रमुख स्थान को ग्रहण कर लिया है। इस युग में सब कुछ समय पर निर्भर होता है। इसलिए किसी ने कहा था कि हमारे लिए भगवान ने कुछ समय दिया है, उसके लिए धैर्य रखना चहिए। प्रत्येक कार्य करने के लिए समय की जरूरत होती है। इसलिए हमें समय को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। हमें समय का महत्व तब पता चलता है, जब हमारे पास वास्तव में इसकी कमी होती है। इसीलिए कहते है समय किसी का इंतजार नहीं करता है और न ही लौटकर वापस आता है। किसी भी काम को समय पर करना चाहिए। सभी को समय की महत्ता समझनी चाहिए। जब हम विद्यार्थी जीवन में अपने इस अनमोल समय के बारे में जान लेते हैं, तो हम अपने समय का सदुपयोग करने से अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

राजस्थान

- दृष्टि वर्मा कक्षा-आठवीं

"पधारो म्हारे देस" यह वाक्य सुनते ही मस्तिष्क में राजस्थान का विचार आता है। राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बडा राज्य है। यहाँ की राजधानी जयपुर है। यहाँ पर मारवाडी भाषा बोली जाती है। राजस्थान का अर्थ है-राजाओ का स्थान। राजपूत वंश के शासकों द्वारा शासित होने के कारण मध्यकाल में इसे राजपुताना भी कहा जाता था। राजस्थान की धरती को वीरों की धरती कहा जाता है। पृथ्वीराज चौहान, गोरा-बादल, महाराणा प्रताप , दुर्गादास राठौड़, अमरसिंह राठौड़, जैसे वीर पुरुष राजस्थान की धरती पर ही पैदा हुए। राजस्थान के प्रमुख शहरो में जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा, माउंट-आबू आदि प्रसिद्ध हैं। यहाँ अनेक पर्यटक स्थल जैसे आमेर किला, हवामहल, जयगढ़, सिटी पैलेस, जंतर-मंतर, मेहरानगढ़, कुम्भलगढ़, चित्तौडगढ़, आदि स्थित हैं। राजस्थान की संस्कृति, कला, खान-पान, पहनावा बहुत ही प्रसिद्ध हैं। राजस्थान का प्रमुख भोजन दाल बाटी व चूरमा हैं। घूमर राजस्थान का राज्य नृत्य है। राजस्थान का प्रसिद्ध त्यौहार तीज व गणगौर हैं। राजस्थान का ऊंट महोत्सव, मरू महोत्सव, मेवाड़ महोत्सव, पुष्कर मेला आदि प्रसिद्ध हैं। यहाँ देश विदेश से लाखों पर्यटक भ्रमण के लिए आते हैं। पुष्कर में विश्व का एकमात्र ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है। अतः राजस्थान एक बहुत ही सुन्दर व दर्शनीय स्थल है।

बेटी

- डी. स्नेहा लता कक्षा - छठीं

बेटी एक वरदान है

माँ की शान है, पिता का मान है

बेटे से भी बढ़कर है बेटी

जीवन का सारांश है बेटी

माँ-बाप के सपनों को साकार बनाती है बेटी

दो परिवारों को जोड़ने वाली है बेटी

दूर होकर भी नहीं छोडती है मायके को

मुस्कुराते हुए आगे बढ़ती है बेटी

बेटी पराई नहीं होती, घर की पहचान होती है

भाग्यशाली है जिनके पास बेटियां होती हैं।

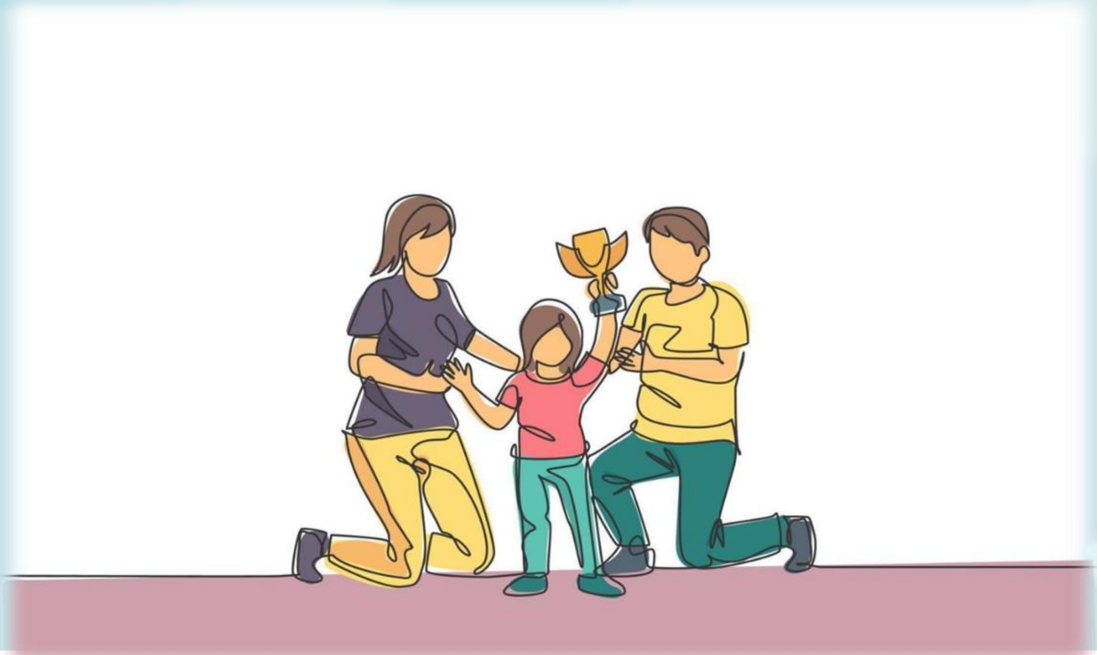

दो दोस्त

-अली इम्रान कक्षा- आठवीं

लकी और कर्स दो दोस्त थे जब भी वे साथ जाते थे तो गांव वाले उनका मजाक उड़ाते थे। हैलो लकी! आप कर्स को लेकर क्यों घूम रहे हैं? उसका नाम इतना नकारात्मक है कि उसका किरदार भी ऐसा ही होना चाहिए। हालांकि लकी को इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन कर्स को बहुत बुरा लगा।

एक बार, जब लकी गाँव से बाहर था, उसके घर में आग लग गई। गाँव वाले पास आकर आग बुझाने से डर रहे थे। यह कर्स ही था जिसने बहादुरी से आग से लड़ाई की और उसे बुझाया। वापस लौटने पर लकी ने पूरी कहानी सुनी।

उसने अपने मित्र कर्स को गर्व से गले लगा लिया और गांव वालों से कहा, देखो मेरा घर किसने बचाया? यह मेरा मित्र कर्स है। नाम में क्या है? चरित्र में है कि कोई अच्छा है या बुरा। कभी भी किसी का मूल्यांकन नाम से न करें।

सीख: नाम चरित्र को प्रतिबिंबित नहीं करता

गाय और शेर

- जास्मिन रिज्वानशाह, कक्षा नौवीं

एक पहाड़ी के नीचे रामगढ़ नाम का एक गांव था। गांव के सारे जानवर हरी घास खाने के लिए सुबह उसी पहाड़ी के ऊपर बसे जंगल में जाते और शाम होते-होते घर वापस आ जाते थे। हर दिन की तरह लक्ष्मी नाम की एक गाय अन्य गायों के साथ उसी पहाड़ी के जंगल में घास खाने के लिए गई थी। वह हरी घास खाने में इतनी ज़्यादा प्रसन्न थी कि वह कब एक शेर की गुफ़ा के पास पहुंच गई, उसे पता भी नहीं चला।शेर अपनी गुफ़ा में सो रहा था और वह पिछले दो दिनों से भूखा भी था। जैसे ही लक्ष्मी शेर की गुफ़ा के पास पहुँची, गाय की खुशबू से शेर की नींद खुल गयी। वह शेर धीरे-धीरे गुफ़ा से बाहर आया और गुफ़ा के बाहर गाय देखकर खुश हो गया। शेर ने मन ही मन सोचा कि आज उसकी दो दिनों की भूख मिट जाएगी। वह इस तंदुरुस्त गाय का ताज़ा मांस खाएगा और यह सोचकर उसने एक तेज़ दहाड़ लगायी। लक्ष्मी शेर की दहाड़ सुनकर डर जाती है। जब वह अपने आस-पास देखती है, तो वहां दूर-दूर तक उसको कोई भी दूसरी गायें नहीं दिखीं। जब वह हिम्मत करके पीछे मुड़ी, तो उसे सामने शेर खड़ा हुआ दिखाई दिया। उस शेर ने लक्ष्मी को देखकर फिर से दहाड़ लगायी है और लक्ष्मी से कहा, "मुझे दो दिनों से कोई शिकार नहीं मिल रहा था, मैं भूखा था। शायद इसलिए भगवान ने मेरा पेट भरने के लिए तुझे मेरे यहां पर भेजा है। आज मैं तुझे खाकर अपनी भूख मिटा लूंगा।" शेर की बात सुनकर लक्ष्मी डर जाती है। वह रोते हुए शेर से कहती है "मुझे जाने दो, मुझे मत खाओ। मेरा एक छोटा बच्चा है, जो अभी सिर्फ मेरा ही दूध पीता है और उसे घास खाना अभी तक नहीं आया है।" लक्ष्मी की बात सुनकर शेर हंसते हुए कहता है, "तो क्या मैं अपने हाथ में आए शिकार को ऐसे ही जाने दूं? मैं तो आज तुझे खाकर अपनी दो दिनों की भूख मिटाऊंगा।" शेर के ऐसा कहने पर लक्ष्मी उसके सामने रोने लगी और विनती करते हुए कहती है कि "आज मुझे जाने दो। मैं आज अपने बछड़े को आखिरी बार दूध पिला दूंगी और उसे बहुत सारा प्यारा करके, कल सुबह होते ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी। फिर तुम मुझे खा लेना और अपना भूखा पेट भर लेना।" शेर लक्ष्मी की यह बात मान जाता है और धमकी देते हुए कहता है कि, "अगर कल तू नहीं आई, तो मैं तेरे गांव आऊंगा, फिर तुझे और तेरे बेटे दोनों को खा जाऊंगा।" लक्ष्मी शेर की यह बात सुनकर खुश हो जाती है और शेर को अपना वचन देकर गांव वापस चली जाती है। वहां से वह सीधे अपने बछड़े के पास जाती है। उसे दूध पिलाती है और बहुत सारा प्यार करती है। फिर बछड़े

को शेर के साथ हुई सारी घटना बताती है और कहती है कि उसे अब अपना ख़्याल ख़ुद ही रखना होगा। वह कल सुबह होते ही अपना वचन पूरा करने के लिए शेर के पास चली जाएगी। अपनी मां की बातें सुनकर बछड़ा रोने लगता है। दूसरे दिन सुबह होते ही लक्ष्मी जंगल की तरफ निकल जाती है और शेर की गुफ़ा के सामने पहुंचकर शेर से कहती है, "अपने वचन के अनुसार मैं तुम्हारे पास आ गई हूँ। अब तुम मुझे खा सकते हो।" गाय की आवाज़ सुनकर शेर अपनी गुफ़ा से बाहर निकलकर आता है और भगवान के अवतार में प्रकट होते हैं। वह लक्ष्मी से कहते हैं, "मैं तो बस तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। तुम अपने वचन की पक्की हो। मैं इससे बहुत प्रसन्न हुआ। तुम अब अपने घर और बछड़े के पास वापस जा सकती हो।" इसके बाद वे उस गाय को गौ माता होने का वरदान भी देते हैं और उसी दिन के बाद से सभी गायों को गौ माता कहना शुरू कर देते हैं।

<u>कहानी से सीख</u>

हमें जान की बाज़ी लगाते हुए भी अपने दिए हुए वचन को पूरा करना चाहिए। यही हमारे दृढ़ व्यक्तित्व को दर्शाता है।

ज्ञान का मूल्य

- साहिति, कक्षा नौवीं

सागरदत्त नगर के एक बड़े धनी और प्रसिद्ध व्यापारी थे। उनका बेटा समझदार और बुद्धिमान युवक था जो हर वक्त कुछ न कुछ सोचता रहता था । उसने कई ग्रंथों का अध्ययन किया था और उनकी अच्छी बातों को भी अपने जीवन में उतार लिया था । इसीलिए वह चाहता था कि अपना जीवन अपने ढंग से जिए ।लेकिन सागरदत्त को यह बात पसंद नहीं थी । वे चाहते थे कि बेटा भी उन्हीं की तरह व्यापार में मन लगाए । उनका कहना था कि जीवन में धन है तो सब कुछ है, धन के बिना कुछ नहीं है । इसीलिए वे बार-बार बेटे को व्यापार में ध्यान लगाने के लिए कहते थे । पर बेटे पर उनकी बातों का कोई असर ही नहीं होता था । एक बार की बात, वह कहीं जा रहा था । रास्ते में उसे एक विद्वान व्यक्ति मिला जो सौ मुद्राओं में एक श्लोक बेच रहा था । सागरदत के बेटे ने पूछा, तो उसने कहा, कि यह श्लोक बहुत महत्त्वपूर्ण है और जीवन में पग-पग पर काम आने वाला है । इसीलिए इसका इतना अधिक मूल्य है ।सुनकर व्यापारी के बेटे को बड़ा कौतुक हुआ । उसने झट जेब से सौ मुद्राएँ निकाली और विद्वान व्यक्ति का वह श्लोक खरीद लिया । फिर उसने बड़े ध्यान से उस श्लोक को पढ़ा । उस कागज पर लिखे हुए श्लोक का अर्थ था कि 'किसी प्राणी को जीवन में जो मिलना है, वह तो हर हाल में मिलता ही है । और जो नहीं मिलना होता, वह कितनी ही कोशिश करने पर भी आखिर नहीं मिलता ।'सागरदत्त के नवयुवक बेटे को यह बात अच्छी लगी ।उसने उसे गाँठ में बाँध लिया।वह घर आया तो पिता के पूछने पर उसने बताया कि उसने सौ मुद्राओं में एक बड़ा अच्छा श्लोक खरीद लिया है …….सुनकर पिता ने सिर पीट लिया । बोले, "मुझे हैरानी है कि मेरे बेटे होकर भी तुम इतने मूर्ख और नालायक कैसे हो गए?"

इस पर व्यापारी के बेटे को बड़ा दुख हुआ । वह उसी समय अपना घर छोड़कर निकल पड़ा । चलते-चलते वह एक अनजान शहर में जा पहुंचा । वहां वह यहां से वहां, वहां से यहाँ घूमने लगा । रहने का कोई ठीया-ठिकाना तो था नहीं । लिहाजा जहां भी उसका मन होता, वहां ठहर जाता । किसी न किसी तरह भोजन का प्रबंध भी हो जाता । रास्ते में जो भी मिलता या उससे बात करता उससे वह सिर्फ एक ही बात कहता था कि "जो प्राप्त होने वाला है, वह तो हर हाल में मिलता ही है और जो प्राप्त नहीं होने वाला, वह कितनी ही कोशिश कर ले, हाथ में नहीं आता ।"उसकी बातें सुनकर लोगों ने उसे सिद्धपुरुष समझ लिया और उसका विचित्र सा नाम रख दिया-प्राप्तव्य अर्थ । जो

कुछ वह कहा करता था, उसका सार भी यही था । लिहाजा लोगों को उसका यही नाम जंचा ।

उस अनजान शहर में व्यापारी का बेटा प्राप्तव्य अर्थ कई दिनों तक भटकता रहा । वहाँ उसे एक से एक अनोखे अनुभव हुए । यहाँ तक कि राजकुमारी और मंत्री की बेटी भी उस पर रीझ गई । बिना माँगे हर ओर से उस पर सौभाग्य बरसने लगा । वह देखकर हैरान होता और इससे उस श्लोक पर उसका विश्वास और अधिक बढ़ गया । लोग उसे देखकर और उसकी बातें सुन-सुनकर चकित होते । उसकी प्रशंसा करने वाले बहुत से लोग थे जो चाहते थे कि वह उन्हीं के साथ रहे । पर व्यापारी का वह विचारशील बेटा तो बस, यहाँ से वहाँ घूमता ही रहता, जैसे उसके पैर में चक्कर हों! वह सबसे एक ही बात कहता था कि जो मिलने वाला है वह तो हर हाल में मिलता ही है और जो मिलने वाला नहीं है, वह कितनी ही कोशिश कर लें, कभी हासिल नहीं होता । लोग उसकी बात सुनकर हैरान होते । और मन ही मन उसकी बातों का अर्थ सोचते रहते ।

एक दिन की बात, प्राप्तव्य अर्थ कहीं जा रहा था । सामने से एक बारात आ रही थी । वह वरकीर्ति की बारात थी जिसका विवाह एक बड़े सेठ की बेटी से हुआ था । प्राप्तव्य अर्थ भी उस बारात में शामिल हो गया और बारात के साथ-साथ विवाह-मंडप में पहुँच गया । कुछ दिनों बाद प्राप्तव्य अर्थ अपने नगर लौटा, तो उसके पिता सागरदत्त सारी बात सुनकर बहुत खुश हुए ।अब उन्हें अपनी गलती पता चल गई थी और समझ में आ गया था कि उसी बेशकीमती श्लोक ने आखिर उसके बेटे को पूरा जीवन बदल दिया, जिसे उसने सौ मुद्राओं में खरीदा था ।सच ही कहा गया है कि ज्ञान का कोई मोल नहीं है । वह दुनिया का सबसे अनमोल खजाना है । व्यापारी के बुद्धिमान बेटे ने उसी की कद्र की और एक दिन अपने सौभाग्य से सभी को मुग्ध और चकित कर दिया ।

गाजर का हलवा

- श्री वर्धन साई, कक्षा नौवीं

आवश्यक सामग्री:

4 से 5 बड़े साइज की गाजर, एक कप दूध

आधा कप चीनी, आधा कप मावा

7 से 8 बादाम (बारीक कटे), 8 से 10 किशमिश (धो लें), 7 से 8 काजू

विधि

- सबसे पहले सभी गाजर को छीलकर धो लें और कद्दूकस करें ।
- अब गैस पर एक कड़ाही रखें. उसमें दूध डालकर, कद्दूकस की हुई गाजर मिलाकर मध्यम आंच पर पकाएं ।
- दूध और गाजर को एक बड़ी चम्मच से चलाते रहें ।
- जब गाजर का सारा पानी सूख जाए और दूध गाढ़ा होकर उसमें अच्छी तरह मिक्स हो जाए, तो गाजर में चीनी और घी डालकर अच्छी तरह मिला ले।
- चीनी घुलने के बाद उसे भी अच्छी तरह पानी सोखने दें।
- गाजर पकने के बाद जब उसका सारा पानी सूख जाए, तो उसमें खोया मैश करते हुए चलाएं।
- फिर हलवे में बादाम, किशमिश, काजू, पिस्ता व इलायची मिलाएं और उसे मध्यम आंच पर चम्मच से चलाते हुए पकाएं।
- अब गैस बंद कर दें । लीजिए तैयार है जायकेदार गाजर का हलवा अब बिना

देर किए गर्मागर्म सर्व करें।

सजावट के लिए:

सूखे मेवे से गाजर का हलवा गार्निश करें.

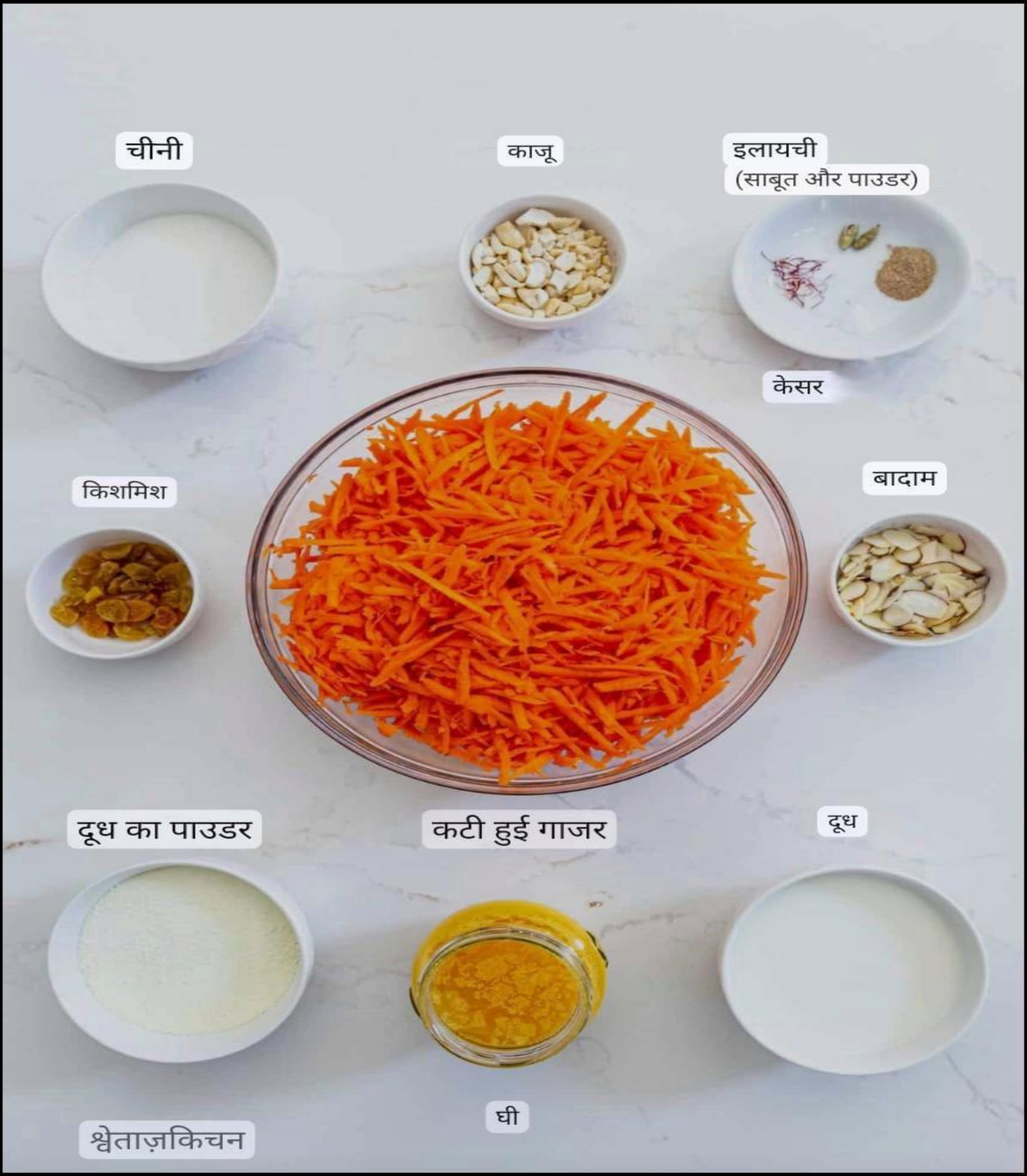

॥ श्री ॥

॥ संस्कृतम् ॥

Samskrutam

“मम प्रिय पुस्तकम्: :श्रीमद् भगवद्गीता”

पि. सुब्बाराव:
TGT संस्कृत अध्यपक:
M.A, B.E.d. M.phil.

संस्कृत साहित्यस्य प्रसिद्धतमः ग्रन्थः श्रीमद्भगवद्गीता अस्ति। इयम् अस्माकं देशधर्मसंस्कृतीनाम् अमूल्यनिधि रुपेण प्रतिष्ठिता वर्तते। अस्याः रचयिता वेदव्यासः आसीत्। एषा महाभारतमहाकाव्यस्य एकः भागः अस्ति।

अस्मिन् ग्रन्थे अष्टादशः अध्यायाः सप्तशत् श्लोकाः च संति । गीता ज्ञानधर्मस्य एकः महान कोषोऽस्ति । जीवन विकासाय सर्वेऽपि विचाराः गीतायां दृश्यन्ते। विदेशेषु अपि दर्शनशास्त्रे गीता पाठ्यपुस्तक रुपेण स्वीकृता अस्ति। गीतायां निष्काम कर्मयोगस्य महान उपदेश: विद्यते –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥ 2.47

आत्मनः अमरताया संदेशः गीतायां वर्तते । आत्मा अजरः अमर: नास्ति । इयं गीता सर्वेभ्यः स्वकर्त्तव्यस्य ज्ञानं दत्वा मोक्षाय कल्पते। परमसुख शांति प्राप्त्यर्थ च अस्याः पठनं पाठनं च नित्यं करणीयम् ।

. मम प्रियम् पुस्तकम् श्रीमद्भगवद्गीता अस्ति।

२. श्रीमद्भगवद्गीता समस्तसंसारे विख्याता ।

४.अस्याम् अर्जुनं प्रति प्रदत्तं श्रीकृष्णस्य उपदेशवर्णनम् अस्ति।

५. संसास्य अधिकांशभाषासु अस्या: गीतया: अनुवादाः सम्पन्नाः।

६. अष्टादशअध्यायेषु विभक्ता श्रीमद्भगवद्गीता अध्यात्म कर्म ज्ञान भक्ति ध्यान संन्यास आदि मार्ग उपदेशिका ।

७. सप्तशत श्लोकात्मके अस्मिन् लघुग्रन्थे सकलमानवतायै शांति सन्देशाः प्रदत्ताः।

८.श्रीमद्भगवद्गीता निष्काम कर्मणः उपदेशं ददाति , निर्भीकतां च शिक्षयति।

गीतायां सरल पथ दर्शनने सहैव पद्यस्य उत्कृष्टा स्वरूपम् दृश्यते।

११. गीतायाः संदेशः विश्वबंधुत्वस्य , विश्व शांतेः संदेशः , आदर्श मानवस्य च संदेश: ।

१२. सर्वशास्त्राणां सारभूता गीता अमूल्यम् अप्रतिम ग्रन्थरत्नं कथ्यते।

हृदय दुर्बलता पर -

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप।।2.3।

भावार्थ :-

हे पृथानन्दन अर्जुन इस नपुंसकता को मत प्राप्त हो क्योंकि तुम्हारे लिए यह उचित नहीं है। हे परंतप हृदय की इस तुच्छ दुर्बलताका त्याग करके युद्ध के लिए खड़े हो जाओ।

हे पार्थ क्लीव (कायर) मत बनो। यह तुम्हारे लिये अशोभनीय है? हे परंतप हृदय की क्षुद्र दुर्बलता को त्यागकर खड़े हो जाओ।।

उत्तम आचरण पर -

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः |
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ||3. 21

भावार्थ :-

महान व्यक्ति जो कार्य करते हैं, सामान्य लोग उसका अनुसरण करते हैं। वे जो भी मानक तय करते हैं, पूरी दुनिया उसका अनुसरण करती है।

मनवश् पर -

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ 6.34॥

हे कृष्ण! क्योंकि मन अति चंचल, अशांत, हठी और बलवान है। मुझे वायु की अपेक्षा मन को वश में करना अत्यंत कठिन लगता है।

श्री भगवान् उवाच -

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् |
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ||6. 35||

भगवान कृष्ण ने कहा है महाबाहु कुंती पुत्र, तुम जो कहते हो वह सही है; मन को वश में करना सचमुच बहुत कठिन है। लेकिन अभ्यास और वैराग्य से इसे नियंत्रित किया जा सकता है।

समत्वम् or स्थितप्रज्ञता पर -

सम: शत्रु च मित्रे च तथा मानापमानयो: |
शीतोष्णसुखदु:खेषु सम: सङ्गविवर्जित: ||12. 18||
तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनि सन्तुष्टो येन केनचित् |
अनिकेत: स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नर: ||12. 19||

भावार्थ :-

जो मित्र और शत्रु के समान हैं, मान और अपमान, सर्दी और गर्मी, सुख और दुःख में समभाव रखते हैं और सभी प्रतिकूल संगति से मुक्त हैं; जो लोग स्तुति और निन्दा को समान रूप से लेते हैं, जो मौन चिंतन में लगे रहते हैं, जो कुछ भी मिलता है उसी में संतुष्ट रहते हैं, निवास स्थान के प्रति आसक्त नहीं होते हैं, जिनकी बुद्धि दृढ़ता से मुझमें स्थिर होती है और जो मेरे प्रति भक्ति से भरे होते हैं, ऐसे लोग मुझे बहुत प्रिय हैं |

उत्तम वचन एवं व्यवहार पर -

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।17.15।।

भावार्थ :-

जो शब्द क्लेश उत्पन्न न करने वाले हों, सत्य हों, अहानिकर हों और हितकर हों, साथ ही वैदिक शास्त्रों का नियमित पाठ करें- ये वाणी का तप कहा गया है।

यत्र योगश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीविजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥78॥

जहाँ योग के स्वामी श्रीकृष्ण और श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन हैं वहाँ निश्चित रूप से अनन्त ऐश्वर्य, विजय, समृद्धि और नीति होती है, ऐसा मेरा निश्चित मत है।

भागवद्गीता पढ़ो , सुख शांति से रहो |

जयतु भारतम् जयतु संस्कृतम्

एहिएहि वीर रे | (गीतम्)

पि. साई अक्षया श्री,

कक्षा -7 क्रमसंख्या -3

एहिएहि वीर रे |

वीरतां विधेहि रे ,

भारतस्य रक्षणाय ,

जीवनं प्रदेहि रे |

त्वं हि मार्गदर्शक:

त्वं हि देशरक्षक:

त्वं हि शत्रुनाशक:

फालनागतक्षक: ||

पदं पदं मिलच्चलेत्

सोत्साहं मनो भवेत्

भरतस्य गौरवाय

सर्वदा जयो भवेत् ||

जयतु भारतम् जयतु संस्कृतम् |

विविध स्तुतयः

-के. साहिती

कक्षा -9 क्रमसंख्या -16

<u>सरस्वती स्तुति</u>

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा (श्लोक 1)

भावार्थ :-

जो परमेश्वरी भगवती शारदा कुंदपुष्प, चंद्र और बर्फ के हार के समान श्वेत है और श्वेत वस्त्रों से सुशोभित हो रही है जिसके हाथों में वीणा का श्रेष्ठ दंड सुशोभित है. जो श्वेत कमल पर विराजमान है जिसकी स्तुति सदा ब्रह्मा विष्णु और महेश द्वारा की जाती है. वह परमेश्वरी समस्त दुर्मति को दूर करने वाली माँ सरस्वती मेरी रक्षा करें.

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥

भावार्थ :

शरत्काल में उत्पन्न कमल के समान मुखवाली और सब मनोरथों को देनेवाली शारदा सब सम्पत्तियों के साथ मेरे मुख में सदा निवास करें ।

<u>गुरुस्तुति</u>

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

भावार्थ :

गुरु ब्रह्मा है,गुरु विष्णु है,गुरु हि शंकर है; गुरु हि साक्षात् परब्रह्म है; उन सद्गुरु को प्रणाम।

<u>संस्कृत में भोजन मन्त्र -</u>

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ श्रीमद्भगवद्गीता 4.24

भावार्थ :

जिन वस्तुओं को हम खुद को खिलाने के लिए उपयोग करते हैं वे ब्रह्मा हैं। भोजन ही ब्रह्मा है। भूख की आग में हम ब्रह्मा महसूस करते हैं। हम ब्रह्मा हैं और भोजन खाने और पचाने की प्रक्रिया ब्रह्मा की क्रिया है। अंत में, हम प्राप्त परिणाम ब्रह्मा है।

शांति मंत्र -

ॐ असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

- बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28

हिन्दी भावार्थ:

हे प्रभु! मुझे असत्य से सत्य की ओर ।

मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ।

और मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो॥

ॐ सह नाववतु ।

सह नौ भुनक्तु ।

सह वीर्यं करवावहै ।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विदविशावै ।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ कृष्णयजुर्वेदः तैत्तिरीयोपनिषद् 2.2.2.

अर्थ :

1: ओम , हम दोनों एक साथ आगे बढ़ें (अपनी पढ़ाई में, शिक्षक और छात्र),

2: हम दोनों एक साथ (अपनी पढ़ाई में, शिक्षक और छात्र) आनंद लें,

3: हम दोनों एक साथ मिलकर (अपनी पढ़ाई में) प्रदर्शन करें) जोश के साथ (गहरी एकाग्रता के साथ),

4: हमने जो अध्ययन किया है वह प्रतिभा (समझ की, ज्ञान की ओर ले जाने वाली)से भरायह शत्रुता को जन्म न दे(समझ की कमी के कारण),

5: ओम् शांति , शांति , शांति ।

ओम् शांति: , शांति: , शांति: ।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम् | Importance of Sanskrit Language in Sanskrit

जि.शांति प्रिया कक्षा -8 क्रमसंख्या -1

संस्कृतम् जगतः अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृतम् भारतस्य जगत: च भाषासु प्राचीनतमा। संस्कृता वाक्, भारती, सुरभारती, अमरभारती, अमरवाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, गीर्वाणी, देववाणी, देवभाषा, दैवीवाक् इत्यादिभिः नामभिः इयंभाषा प्रसिद्धा। भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः। संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्भूताः। तावदेव भारत-युरोपीय-भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राचुर्यं च प्रदर्शयन्ति।

संस्कृतवाङ्मयं विश्ववाङ्मये स्वस्य अद्वितीयं स्थानम् अलङ्करोति। संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदाः सन्ति। वेद-शास्त्र-पुराण-इतिहास-काव्य-नाटक-दर्शनादिभिः अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ती अस्ति एषा देववाक्। न केवलं धर्म-अर्थ-काम-मोक्षात्मकाः चतुर्विधपुरुषार्थहेतुभूताः विषयाः अस्याः साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक-लौकिक-पारलौकिकविषयैः अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी।संस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभूताभाषा अस्ति | संस्कृतभाषा जीवनस्य सर्वसंस्कारेषु संस्कृतस्य प्रयोग: भवति।

सर्वासामेताषां भाषाणाम् इयं जननी।

संस्कृतभाषां वयं सर्वे जानीम: आर्याणां सुलभा शोभना गरिमामयी च संस्कृत भाषा वाणी अस्ति।

वेदाः, रामायणम् , महाभारतम्, भगवद् गीता इत्यादि ग्रन्थाः संस्कृतभाषायां एवं विरचितानि।

अस्या: भाषायाः महत्वं विदेशराज्येष्वपि प्रसिध्दं।

संस्कृतभाषायाः संरक्षणार्थं अस्माभि: संस्कृतपठनं प्रचारणं,प्रसारणं च अवश्यं करणीयं।

संस्कृतवाङ्मयं विश्ववाङ्मये स्वस्य अद्वितीयं स्थानम् अलङ्करोति।

जयतु भरतम् जयतु संस्कृतम्

"विद्यायाः महत्वस्योपरि संस्कृतश्लोकाः"

यस् .के. नजीमः कक्षा -9 क्रमसंख्या -1

ज्ञान, समझ, विचार, और सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायता प्रदान करने वाली विद्या हमारे लिए एक अनमोल धन है। हमारी भारतीय संस्कृति में विद्या को विशेष महत्व दिया जाता है और इसकी प्रशंसा करने के लिए कई श्लोक उपलब्ध हैं।

इस लेख में, हम संस्कृत के कुछ ऐसे श्लोकों पर बात करेंगे जो विद्या की महत्ता और उसके महान स्वरूप को दर्शाते हैं।

(1)

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत्।
नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम्॥

भावार्थः किसी के लिए विद्या के समान बन्धु नहीं होता, किसी के लिए विद्या के समान सुहृद् नहीं होता।
धन के समान विद्या नहीं होती, सुख के समान विद्या नहीं होती॥

(2)

विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धानमाप्नोति धानाद्धर्मं ततः सुखम्॥

भावार्थः विद्या विनय का उपहार देती है, विनय पात्रता को प्राप्त कराती है।
पात्रता से धार्मिकता प्राप्त होती है, और धार्मिकता से सुख प्राप्त होता है।

(3)

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥

भावार्थ :जिसे सुख की अभिलाषा हो (कष्ट उठाना न हो) उसे विद्या कहाँ से ? और विद्यार्थी को सुख कहाँ से ? सुख की इच्छा रखनेवाले को विद्या की आशा छोडनी चाहिए, और विद्यार्थी को सुख की ।

(4)

न चोरहार्यं न च राजहार्यंन भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधन प्रधानम् ॥

भावार्थ : विद्यारुपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, राजा ले नहीं सकता, भाईयों में उसका भाग नहीं होता, उसका भार नहीं लगता, (और) खर्च करने से बढता है । सचमुच, विद्यारुप धन सर्वश्रेष्ठ है ।

(5)

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम् ।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम् किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥

भावार्थ : विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, पत्नी की तरह थकान दूर करके मन को रीझाती है, शोभा प्राप्त कराती है, और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है । सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह विद्या क्या क्या सिद्ध नहीं करती ?

जयतु भारतम् जयतु संस्कृतम्

తెలుగు

వడ్రంగిపిట్ట, తాబేలు, జింకల స్నేహం

ఒకసారి, ఒక జింక వేటగాడి వలలో చిక్కుకుంది. తనకు చేతనైనంత ప్రయత్నించింది. తనను తాను విడిపించుకోలేకపోయింది, తను భయపడటం ప్రారంభించింది, మరియు ఏడుస్తుంది. ఒక వడ్రంగిపిట్ట ఏడుపు విన్నది. అది జింకకు సహాయం చేయాలనుకుంది. అది సమీపంలోని చెరువు వద్దకు వెళ్లి అక్కడ ఉన్న జంతువులను అడిగింది, "దయచేసి చిక్కుకున్న జింకకు సహాయం చేయడానికి నాతో రండి” అని అన్నది. అందుకు ఒక తాబేలు మాత్రమే ఒప్పుకుంది. వడ్రంగిపిట్ట తాబేలును ఉచ్చుని కొరకమని కోరింది మరియు వేటగాడి ఇంటిని వెతుక్కుంటూ గ్రామానికి వెళ్లింది. వేటగాడు గాఢనిద్రలో ఉన్నాడు. ఇంతలో తాబేలు వలని కొరికేసి జింకను విడిపించింది. తోటి ప్రాణికి సహాయం చేశానని వడ్రంగిపిట్ట సంతోషించింది.

నీతి: నిస్వార్థ సహాయం దేవునికి చేసే సేవ.

ఆలీ ఇమాన్.8 వ తరగతి.

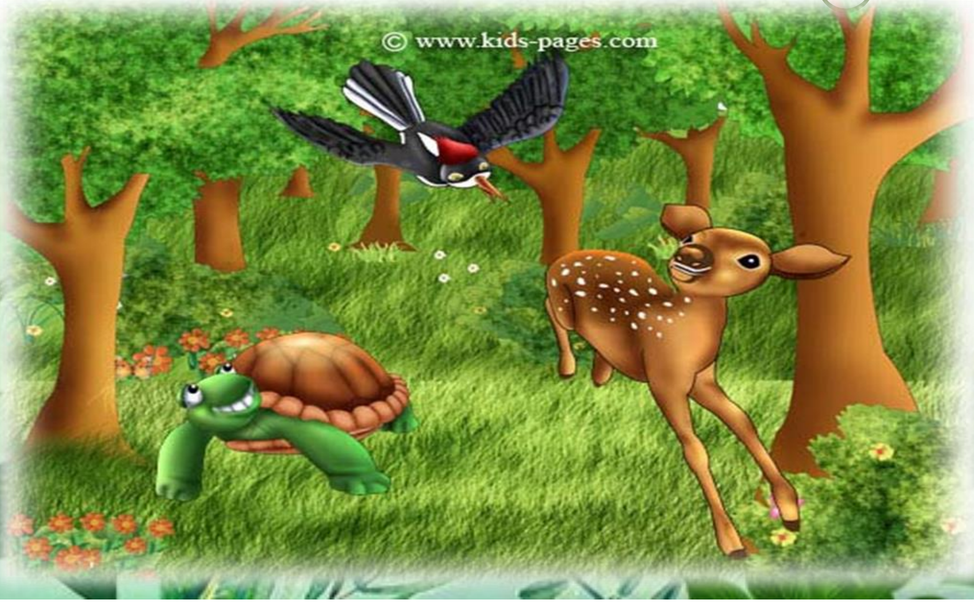

అమ్మ

నా జీవితంలో నా తల్లి అత్యంత ముఖ్యమైన వ్యక్తి అమ్మ గురించి ఎంత చెప్పినా తక్కువే. కనులు తెరిచిన క్షణం కనపడే రూపం అమ్మ. తన ఆత్మ శరీరం పంచి మనకు జన్మనిచ్చిన దివ్య రూపం అమ్మ. అమ్మ కడుపులో ఉండి నేను అరికాళ్ళతో తంతూ ఉంటే నేను అప్పుడు అడుగులు వేస్తున్నానని పొంగిపోయింది. మొదటిసారి నేను మాట్లాడితే మౌనంగా నన్ను చూస్తూ మురిసిపోయింది మా అమ్మ. మనం ఏడుస్తున్నప్పుడు అమ్మ సంతోషించే క్షణం ఏదైనా ఉందంటే అది మనం పుట్టిన క్షణం. నవ మాసాలు మోసి అమ్మ మనల్ని కంటుంది. పురిటి నొప్పులు పడుతుంది. కాని తన బిడ్డను చూసిన వెంటనే ఆ భాధ మరిచి పోతుంది.అమ్మ లేనిదే జగతి లేదు అమ్మ లేనిదే ప్రగతి లేదు అమ్మ లేనిదే జీవితానికి అర్థం లేదు . అమ్మ అనే పదంలో ఎంతో ఆప్యాయత, అనురాగం, ఆనందం, ఆత్మీయత, ఆదర్శం. కమ్మదనం, తీయదనం ప్రేమ. ఇంకా ఎన్నో ఎన్నెన్నో ఎంత చెప్పినా తక్కువే, దేవుడు అన్ని చోట్ల ఉండలేక అమ్మని సృష్టించాడు.

అంతులేని అనురాగం ....అమ్మ!   అలుపెరగని ఓర్పు ....అమ్మ!

అధ్భుతమైన స్నేహం ....అమ్మ!   అపూరూపమైన కావ్యం -....... అమ్మ !

అరుదైన రూపం ....అమ్మ.

పేరు:వైష్ణవి

తరగతి: 9

అందమైన ప్రకృతి

ప్రకృతి అందమైన దేవుని సృష్టి. మనుషులకు. మరియు సమస్త ప్రాణకోటికి జీవనాధారం. ప్రకృతి లోని ప్రతీ పాట.. పులకరింప చేసే పూతోట. ఆ రంగుల హరివిల్లు అందంగా ఆకట్టుకుంటుంది. తన రాక నింగి నేలను కలిపే ఆనకట్ట అవుతుంది. ఇలా ప్రకృతిలో ఎన్నో అద్భుతాలను నిలిపే ఆర్తి... మరేన్నో జీవరాసులను నడిపే స్ఫూర్తి అందమైన ప్రకృతి ఎన్నో అద్భుతాల ఆకృతి... ఆకాశమే నీహద్దు ... ప్రకృతి చెట్లు ప్రసాదించిన అమూల్యమైన వరం. భూమి పై చెట్ల వలన పచ్చని వాతావరణం నెలకొంది. ప్రకృతి మనకు చాలా రకాలుగా ఉపయోగపడుతుంది. దీని వలన గాలి, నీరు, ఆహారం మరెన్నో లభిస్తాయి. ప్రకృతి అనేక జీవులకు నివాసం కల్పిస్తుంది.

సువాసనలువెదజల్లే సుమం నై పూస్తా...నవ వసంతం వీధులలో కోయిల లా కూస్తా...

తూరుపు సంద్రంలో కాంతిరేఖనై నిలుస్తా....చిత్త మాస వేళల్లో చినుకునై

వస్తా...జగతిలో మనసునై నవరస కావ్యలే రాస్తా... ప్రకృతిని ప్రేమించండి

పర్యావరణాన్ని రక్షించండి.వంద రెట్లు తిరిగి ఇస్తుంది..

పేరు:- Sk. అసీమా జాస్మిన్త

తరగతి: -9

నా జన్మస్థలం (కావలి)

కావలి, నెల్లూరు జిల్లా, ఆంధ్రప్రదేశ్ రాష్ట్రంలో ఒక ఊరు.ముందుగా మా ఊరికి కావలి అని పేరు గొప్ప విజయనగర సామ్రాజ్య చక్రవర్తి శ్రీకృష్ణదేవరాయలు గారి అంగరక్షకులు, భటులు, కోటకు కాపలా కాసే వీరులకు శిక్షణ ఇచ్చే ప్రదేశంగా ఉండినది. ఆ కాలంలో రక్షణ కాపలా కాసే వాళ్ళను "కావలి" అనేవారు అదే కాలక్రమేణా కావలి అనే ఊరుగా పేరుగాంచింది. మా ఊరు జిల్లా కేంద్రం నెల్లూరు తరువాత పెద్ద పట్టణం, వస్త్రవ్యాపారంలో చిన్న ముంబైగా పేరుగాంచింది.మా ఊరికి అందమైన రోడ్లు భావనాలు కలవు. మా ఊరుకి 5km దగ్గరలో సముద్రతీరం కలిగిన పల్లెలు కలవు దానివలన ఆటవిడుపుగా వెళ్తుంటారు. మా శివాలయం సుమారు 600 సం" క్రితం శ్రీకృష్ణదేవరాయలు స్థాపించిన దుర్గబ్రమరంబా సమేత మల్లికార్జున శివాలయం కలదు. స్వయంభు గ్రామ దేవతలు కలుగోళ శాంభవి, వోలేరమ్మ అను గ్రామ దేవతలు కల్గిన ఊరు. సర్వమత సమ్మేళనం మా ఊరు ప్రత్యేకం ప్రతి పండగ కుల మత భేదాలు లేకుండా జరుపుకుంటారు.

మా ఊరికి 10km దూరంలో జువ్వలదిన్నే గ్రామంలో ఆంధ్రరాష్ట్ర సాధకులు అమరజీవి పొట్టి శ్రీరాములు గారు సొంత గ్రామం, ఇది ఇప్పుడు ఎందరో మత్స్యకారుల జీవితాలను మార్చే ఫిషింగ్ హార్బర్ కలదు. మాకు 18km దూరంలో రామాయపట్నం పోర్టు నిర్మాణం జరుగుతుంది. వీటివలన ప్రసిద్ధ బ్రహ్మంగారు చెప్పినట్టు కావలి కనక పట్టణం కానుంది. రాజకీయాలలో (కలికి యానాది రెడ్డి, మాగుంట సుబ్బరామిరెడ్డి), నాటక సినిమా రంగంలో (నాగభూషణం,రాజనాల) తయారు చేసిన ఊరు.అందుకే నాకు మా ఊరు మరియు జిల్లాకు రాష్ట్రానికి చాలా ప్రత్యేకం.

ఎస్కే.హాస్నత్,

తరగతి:8

నాన్న

నా -కోసం(కుటుంబం) నిరంతరం నిద్ర అ

న్న-పానీయాలు వదిలి కంటికి రెప్పలా కాపాడుతావు.

అమ్మ మోసేది నవమాసాలు కానీ నేను అమ్మ కడుపులోని పిండంగా,నీ బిడ్డగా ప్రాణం పోసుకున్నప్పటి నుంచి నువ్వు ప్రాణం వదిలే చివరి నిమిషం వరకు నన్ను(కుటుంబం) ప్రేమిస్తావు.దేవుడు అమ్మ అంటే పెదాలు కలిపి నాన్న అంటే పెదాలు విడదీసి పలికిస్తాడు, అయిన దేవుడిని నిందించవు చివరికి నన్ను నువ్వు దేవుడు ఇచ్చిన వరం అనుకుంటావు. ఒక కవి అన్నాడు ఎందుకో నాన్న అమ్మ కన్నావెనుక పడ్డాడు సమాజంలో అని, కానీ కవికి తెలియదు వెనుకపడలేదు వెనకుండి నడిపిస్తున్నాడు అని.ప్రపంచంలో ఏ వరసను అమ్మ, అక్క, అత్త, అన్న, మామ, బావ అని ఎవ్వరినైనా పిలవగలం కానీ నిన్ను ఒక్కడినే నా ప్రాణం పోయేవరకు నాన్న అని పిలవగలను

నాకు తెలిసిన :- బొమ్మవు నన్ను ఆడించి నవ్వించిన బొమ్మవు.

మెజీషియన్ - నా మనసులో అనుకున్నవి నాకు ఇచ్చావు.

టీచర్ - నాకు జీవిత పాఠాలు.చెప్పావు

సంపద - నాకోసం డబ్బులేని పేదవాడిగా అప్పులలో బతికావు.

హీరో - నాకు తెలిసిన హీరో సూపర్ మ్యాన్ కన్నా నువ్వే బలవంతుడువి.

దేవుడు అనేవాడు వుంటే అది నువ్వే,

ఈ జన్మ చాలు నా అదృష్టం నువ్వు నాకు నాన్న అయినందుకు, (దేవుడిగా) నన్ను కన్నందుకు.

- ఎస్కె. అర్బాజ్,

తరగతి:5

జ్ఞానము

>జ్ఞానము ముఖ్యములకన్న శ్రేష్ఠమైనది విలువగల సొత్తులేవియు దానితో సాటి కావు.

→ జ్ఞానము గలవాడు బలవంతుడుగా నుండును. తెలివి గల వాడు శక్తిమంతుడుగా నుండును,

→ బుద్ధి హీనుడు తన కోపమంది కనుపరచును. జ్ఞానము గలవాడు కోపము అణచుకోని దానినిచూపకుండును.

చల్లా ఎనోష్ జై

3వ తరగతి.

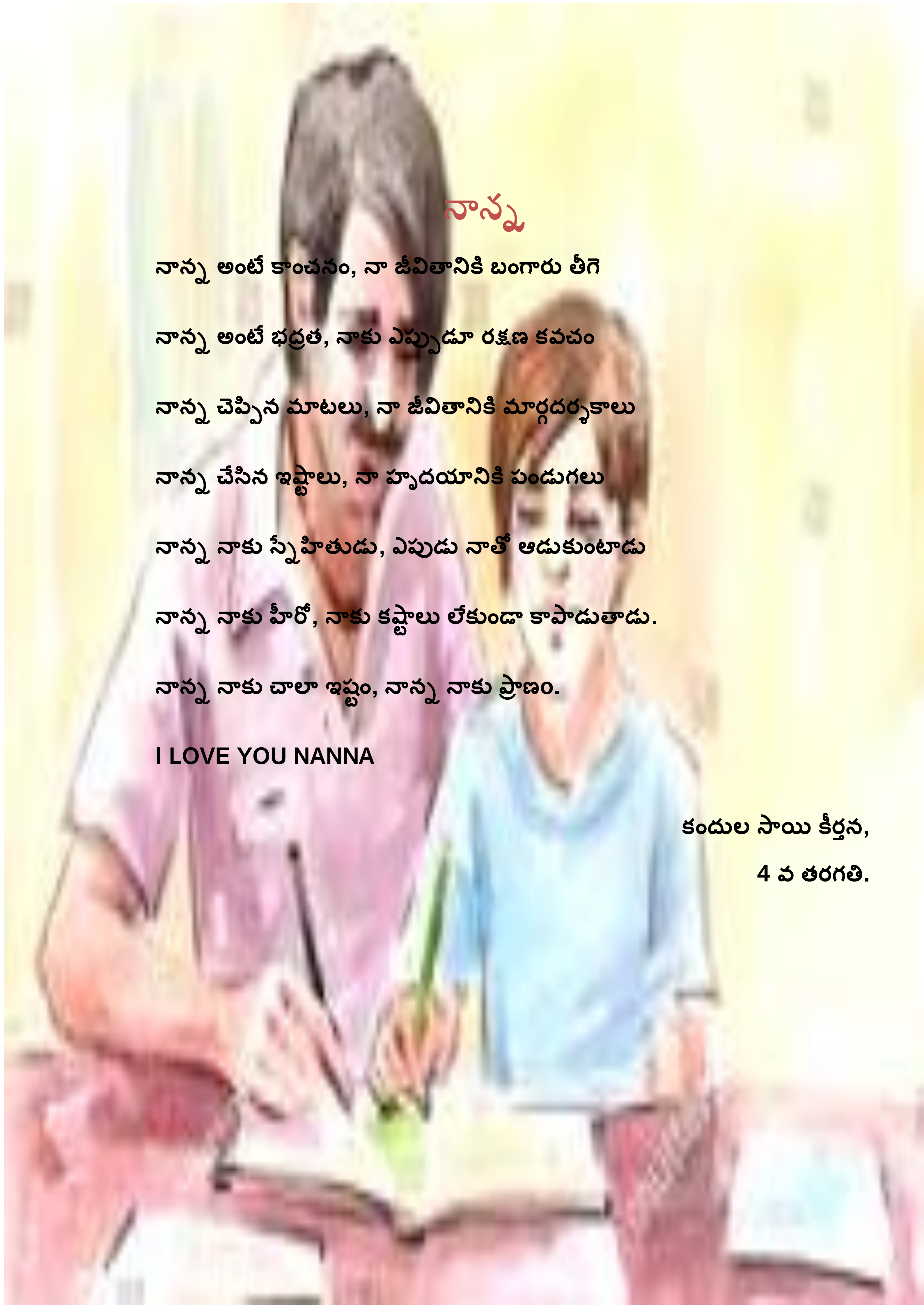

నాన్న

నాన్న అంటే కాంచనం, నా జీవితానికి బంగారు తీగె

నాన్న అంటే భద్రత, నాకు ఎప్పుడూ రక్షణ కవచం

నాన్న చెప్పిన మాటలు, నా జీవితానికి మార్గదర్శకాలు

నాన్న చేసిన ఇష్టాలు, నా హృదయానికి పండుగలు

నాన్న నాకు స్నేహితుడు, ఎపుడు నాతో ఆడుకుంటాడు

నాన్న నాకు హీరో, నాకు కష్టాలు లేకుండా కాపాడుతాడు.

నాన్న నాకు చాలా ఇష్టం, నాన్న నాకు ప్రాణం.

I LOVE YOU NANNA

కందుల సాయి కీర్తన,

4 వ తరగతి.

సాయం

ఒక సారి రాము అనే ఐదవ తరగతి బాలుడు ఒక సారి తను తన విద్యాలయము నుండి ఇంటికి వెళుతున్నప్పుడు ఒక పక్షిని చూశాడు. తను ఆ పక్షి రెక్కలకు గాయంఅయ్యివుండడం తను గమనించాడు. రాము ఆ పక్షి భాదపడడం చూడలేక ఆ పక్షిని నయం చేయడానికి తన ఇంటికి తీసుకువెళ్ళాడు. అక్కడ వాళ్ళు అమ్మకు చూపిస్తే ,అమ్మ రాము ఎందుకు ఈ పక్షిని తీసకు వచ్చావు. దాని చావు, అది చావనివ్వు. దాన్ని వెంటనే తీసుకు వెళ్లి బయట పడేశెయ్యి అని చెప్పింది. కాని రాము బయటపడేయకుండా, ఆ పక్షి ని అమ్మకు కనపడకుండా తన గది లో పెట్టుకొని,ఆ రాత్రి మొత్తం ఆ పక్షికి సేవలు చేసాడు. ఉదయం లేచే సరికి ఆ పక్షి రాము చుట్టూ కిచ్ కిచ్ కిచ్.. అని అరుస్తూ రాము ని లేపాలి అని చూసింది. రాము లేచి ఆపక్షి ని చూచి రాము చాలా ఆనంద పడ్డాడు. ఆ పక్షి శబ్దాలు విని రాము వాళ్ళు తల్లి తండ్రులు రాము గది లోని కి వచ్చి రాము ఆనందాన్ని చూసి వాళ్ళు కూడా చాలా ఆనంద పడ్డారు. రాము చేసిన గొప్ప పనికి వాళ్ళు చాలా గర్వపడ్డారు. అలానే వాళ్ళు రాము పక్షిని తీసుకువచ్చినప్పుడు "అన్న మాటలను గుర్తు చేసుకొని "" సిగ్గు పడ్డారు.

ఆయేషా&స్నేహలత,

తరగతి:6

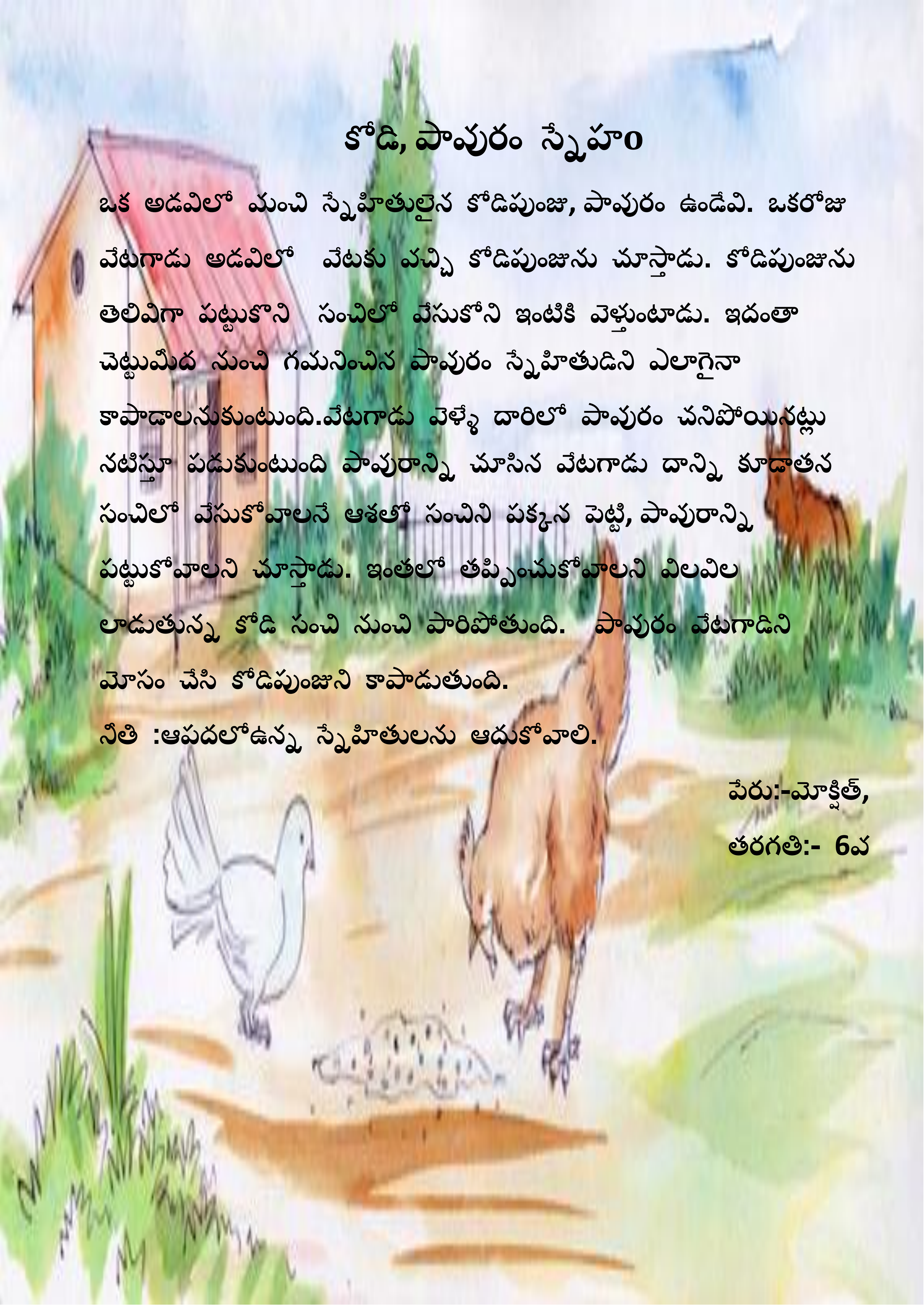

కోడి, పావురం స్నేహం

ఒక అడవిలో మంచి స్నేహితులైన కోడిపుంజు, పావురం ఉండేవి. ఒకరోజు వేటగాడు అడవిలో వేటకు వచ్చి కోడిపుంజును చూస్తాడు. కోడిపుంజును తెలివిగా పట్టుకొని సంచిలో వేసుకోని ఇంటికి వెళ్తుంటాడు. ఇదంతా చెట్టుమీద నుంచి గమనించిన పావురం స్నేహితుడిని ఎలాగైనా కాపాడాలనుకుంటుంది.వేటగాడు వెళ్ళే దారిలో పావురం చనిపోయినట్లు నటిస్తూ పడుకుంటుంది పావురాన్ని చూసిన వేటగాడు దాన్ని కూడాతన సంచిలో వేసుకోవాలనే ఆశతో సంచిని పక్కన పెట్టి, పావురాన్ని పట్టుకోవాలని చూస్తాడు. ఇంతలో తప్పించుకోవాలని విలవిల లాడుతున్న కోడి సంచి నుంచి పారిపోతుంది. పావురం వేటగాడిని మోసం చేసి కోడిపుంజుని కాపాడుతుంది.

నీతి :ఆపదలోఉన్న స్నేహితులను ఆదుకోవాలి.

పేరు:-మోక్షిత్,

తరగతి:- 6వ

తెలుగు గొప్పతనం

తెలుగు అంటే ముందుగా గుర్తొచ్చేది అమ్మ, అమ్మ పాటలు, కవితలు తెలుగింటి సాంప్రదాయాలు తెలుగింటి రుచికరమైన వంటకాలు.అనగా అమ్మ ప్రేమ లాగా తెలుగు కూడా అంత మధురమైన, స్వచ్ఛమైన భాష కాబట్టి, తెలుగు భాష లో ఉన్న ప్రాస తెలుగు అని పలుకుతుంటే ఆ కమ్మదనం ఇంక ఏ భాష లోను ఉండబోదేమో. మన భారతదేశం లో ప్రాంతీయ భాష ప్రతి ఒక్కటి కూడా ఆ రాష్ట్రంలోనే మాట్లాడబడుతుంది.తెలుగు మాత్రం రెండు రాష్ట్రాల్లో మాట్లాడబడుతుంది. "దేశ "భాష లందు తెలుగు లెస్స అని ఒక గొప్ప మహారాజు "శ్రీ కృష్ణ దేవరాయలు వారు చెప్పారు. ఈ శ్రీ కృష్ణ దేవరాయులు గారు గొప్ప రాజులలో ఒకరు . ఆయన 1509 ఫిబ్రవరి 4న విజయనగర సింహాసనాన్ని అధిష్ఠించాడు. మన మాతృభాష చాలా గొప్పది. ఎందుకంటే ఇది చాలా తీయనైన భాష. అలా అని మనకి మన మాతృభాష వచ్చు కదా అని ఇతర భాషలను పక్కన పెట్టకూడదు. ఇతరు భాషలను కూడా నేర్చుకోవాలి. అతి ప్రాచీన దేశ భాషలలో సంస్కృతము తమిళముతో పాటు తెలుగు భాషను 2001 అక్టోబరు 31 న భారత ప్రభుత్వము గుర్తించింది.

డి.స్నేహ లత,

తరగతి-6.

నా స్నేహితులు

స్నేహం ఎంతోగొప్పది............అది మనజీవితం లోకి వస్తే జీవితం చాలా బాగుంటుంది.

నా స్నేహితులు చాలా మంచివారు............నా మంచి ఎప్పుడు కోరుతూనే ఉంటారు.

నేను ఎంత భాధ లో ఉన్న.........ఒక నిమిషం లో భాధ లో ఉన్న నన్ను సంతోషపరిచేది నా స్నేహితులు....

మనం ఆపదలో ఉన్నప్పుడు ఆదుకొని........మనకి ఇంకా దగ్గర అవుతారు............

మనం అమ్మ నాన్నల తో చెప్పలేనివి కూడా................ మన స్నేహితులతో చెప్తాం.

భాధలో అయినా, సంతోషంలో అయినా.........నా దగ్గర డబ్బు ఉన్నా లేకున్నా.........నేను ఉన్నాను అంటూ నాతోనే ఉంటారు. నా స్నేహితులు.

పి.సాయి అక్షయ శ్రీ

7 తరగతి

అమ్మ

* మా అమ్మ పేరు రేవతి

*మా అమ్మ ఇతరులను కూడా మా కుటుంబ సభ్యులు లాగే చూసుకుంటుంది .

*మా అమ్మ మాకు కుటుంబ విలువలను గూర్చి చెప్తుంది.

*మా అమ్మ ప్రతి విషయంలో సానుకూలంగా ఉంటుంది.

*మా అమ్మ గొడవలకు దూరంగా ఉంటుంది.

*ఇంటికి వచ్చిన బంధువులను బాగా చూసుకుంటుంది.

*మా ఆమ్మ మాతో చాలా స్నేహం గా ఉంటుంది.

*సమాజంలో మేము ఎలా ఉండాలో తెలియజేస్తుంది.

*మాకు ఇష్టమయిన వంటలు చేసి పెడుతుంది.

*అందుకే మా అమ్మ అంటే మాకు చాలా ఇష్టం.

అమృత ,

9 తరగతి.

పత్రిక

భారత దేశంలో వ్యవసాయరంగం తర్వాత అతి పెద్ద జీవనాధారం చేనేత వస్త్ర తయారీ. వస్త్రము అనునది సృష్టి ఆరంభం నుంచి ఏర్పాటు చేయబడినది. కాలక్రమమున ఆధునాతన యుగంలో స్వాతంత్ర ఉద్యమంలో ప్రముఖ పాత్ర వహించిన మహాత్మ గాంధీ గారు చేనేతవస్త్రాలు ధరించాలి అని నినాదం ఇచ్చి విదేశీ బట్టలను బహిష్కరించారు. ఆగస్టు 7వ తారీకున జాతీయ చేనేత దినోత్సవముగా జరుపుకుంటారు. ఈ చేనేత కళాకారులైన పద్మశాలి వంశీయులు ప్రపంచ వ్యాప్తంగా విస్తరించి ఉన్నారు. ఒక్క భారత దేశంలో వారి పట్టు సిటీని వీవర్స్ సిటీగా పిలుస్తారు. ఇది హర్యానా రాష్ట్రంలో ఉంది. మన తెలుగు రాష్ట్రాలలో చీరాల, మంగళగిరి, పెడన, ఉప్పాడ, పాటూరు, సిరిసిల్ల, నారాయణపేట, పోచంపల్లి, ప్రాంతాలతో చేనేత చీరలు,చొక్కాలు, టవల్స్ తయారీలో ప్రముఖ పాత్ర పోషిస్తున్నాయి. భారతదేశంలో ఆంధ్రరాష్ట్రంలో చేనేత వృత్తిపై ఆధారపడి జీవించే కుటంబాలు ఎక్కువ. మీరు చట్టసభ లలో కూడా ప్రాతినిధ్యం వహిస్తున్నారు. దేశ, విదేశాలలో చేనేత కళాకారులు దేశ అధినేతలతో ప్రశంసలు పొందుతున్నారు. కాకీ పనికి తగిన వేతనం దొరకకే చేనేత కార్మికులు ఆర్థిక ఇబ్బందులకు గురిఅవుతున్నారు. కాని ప్రభుత్వం నుంచి సరియైన బహుమతి అందిస్తే చేనేత ఖ్యాతి దేశ విదేశాలలో ఇనుమడిస్తుంది.

శాంతి ప్రియా ,

తరగతి:8

ప్రకృతి

ప్రకృతి వలన మనకి ఎన్నో ఉపయోగాలు కలవు. ఈ భూమి మీద జీవజాలం అంతటికి ప్రాణవాయువుని ప్రకృతి అందిస్తుంది మరియు ప్రకృతి నుంచి జీవజాలం అంతటికి ఆహారం మరియు నీరు లభిస్తుంది . ప్రకృతి నుంచి మనకి ఎన్నో ఔషదాలు లభిస్తాయి. మరియు మానవులు నివాసానికి, నివాసమైన ఇంటికి అవసరమైన ఇటుక, ఇసుక, రాళ్ళు కూడ ప్రకృతి నుంచే లభిస్తాయి.

ప్రకృతి మన కోసం అన్నీ అందిస్తున్నాయి కాని మనం మాత్రం దేశ అభివృద్ధి అని చెట్లను నరికివేస్తున్నాం. ఫ్యాక్టరీల నుండి వెలువడుతున్న కాలుష్యపు రసాయనాలు నీటి వనరులలో కలవడం వల్ల నీటి కాలుష్యం అయ్యి, నీటిలోపల బ్రతికే జీవులకు హాని జరుగుతుంది మరియు ఫ్యాక్టరీల నుంచి వచ్చే కాలుష్యపు వాయువుల వలన గాలి కాలుష్యం అవును, ఆ గాలి పీల్చే ప్రతి జీవి కి ప్రమాదకరం.కొంతమంది అడవులను కాల్చివేస్తున్నారు, దానివలన అరణ్య జీవులకు మనుగడ అపాయంలో పడుతుంది. మనుషులు వాడేహానికర ప్లాస్టిక్ వస్తువుల వలన ప్రకృతి నాశనమవుతున్నది. భూమి లోపల వున్న ఖనిజాల కోసం గనులను విపరీతంగా తవ్వుతున్నారు దీని వలన ఆ ప్రదేశంలో నివసించే వన్య ప్రాణులకు ఎంతో ప్రమాదం జరుగుతుంది.

మనము ఎప్పుడైతే ప్రకృతిని కాపాడతామో అప్పుడే ప్రకృతి మనల్ని కాపాడుతుంది. అందుకనే మనము ఫాక్టరీల నుంచి వచ్చే కాలుష్యపు రసాయనాలను నదులలో కలపకుండా అరికడదాం మరియు ఖనిజాల కోసం విపరీతంగా గనులను తవ్వకుండా అరికట్టాల్సిన అవసరం వుంది మరియు ప్లాస్టిక్ వస్తువుల

వినియోగాన్ని తగ్గించి ప్రకృతిని రక్షించుకుందాం. మన చుట్టూ వున్న ప్రదేశంలో చెట్లను నరికివేయకుండా తగు చర్యలు తీసుకుందాం, అలాగే ఖాళీ ప్రదేశాలలో చెట్లను విరివిగా నాటుదాంమరియు ప్రపంచ పర్యావరణ దినోత్సవాన్ని జూన్ 5వ తేదీన ప్రతి ఏట జరుపు కుంటాం.

ప్రకృతి పై కొన్ని నినాదాలు:

* ప్రకృతిని ప్రేమించండి, పర్యావరణాన్ని రక్షించండి.

* మొక్కలు పెంచు, ఆయువును పంచు.

*మనిషికి ఉండాల్సింది ప్రకృతి పైన హక్కు కాదు, ప్రకృతి పట్ల భాధ్యత

*మనం ప్రకృతి భక్షణకై కాదు రక్షణకై ఉండాలి.

* చెట్లు నాటితే క్షేమం, చెట్లు నరికితే క్షామం.

వి.గిరిధర్ నాగ సాయి.

తరగతి :7 .

అవ్వ - తాత

వాళ్ళు మా చిననాటి నేస్తాలు, మీ అందమైన బాల్యపు ఆనవాళ్లు.

కథలతోనే విలువలు నేర్పిస్తారు. కళ్ళముందు ప్రపంచాన్ని చూపిస్తారు.

సరదాగా మాతో ఆటలాడుతూనే, జీవితానికి సరిపడా ఆత్మ విశ్వాసాన్ని మాలో నింపుతారు.

కుటుంబంలో పెద్ద దిక్కులుగా ఉంటారు . మంచి చెడు చెప్పడంలో ఎప్పుడూ ముందుంటారు.

ముందు తరాలకు మార్గదర్శకులుగా వ్యవహరిస్తారు. మన సంస్కృతి సంప్రదాయాలకు వారధులుగా నిలుస్తారు.

ఏమిచ్చి మీ ఋణం తీర్చుకోగలం ఎల్లకాలం మిమ్మల్ని మా హృదయాల్లో దాచుకుంటాం.

మిమ్మల్ని ఎంతగానో ప్రేమిస్తున్నాం. మీరు నేర్పిన 'విలువల్ని, పదిలంగా దాచుకుంటాం.

ఇట్లు

కాగిత.మనోహర్

(సాంఘిక శాస్త్ర ఉపాధ్యాయులు)

ఉపాధ్యాయుడు

"బడి" అనే నారు మడిలో
"అక్షరం" అనే విత్తనం వేసి
"విద్య" అనే నీరు పోసి
"చెడు" అనే కలుపు తీసి
"మంచి" నీతి అనే ఫలాన్ని
సమాజానికి అందించే "స్ఫూర్తి ప్రధాత" ఉపాధ్యాయుడు.

గోగుల. తిరుమల రావు
(ప్రాధమిక ఉపాధ్యయులు)

ENGLISH

SECRETS OF SUCCESS

You will find answer in "classroom"

- Book: Keep on writing
- Blackboard: I show you the way you should walk.
- Benches: Don't tremble at any cost, be strong.
- Ball pen: Use me as a gun.
- Chalk: I help you to make your future better.

K. RISHITHA. 1st-Class

MY FATHER, MY HERO

Provider: **A father is often seen as the one who provides and cares for family's needs.**

Supporter: **Father provides emotional and practical support.**

Guide: **They always give guidance and wisdom, helping their children navigate life's challenges.**

Lover: **He is a lover of unconditional love. A father's love is often characterized by its unwavering nature regardless of circumstances.**

Friend: **While maintaining a parental role fathers can also be a source of friendship and companionship.**

Listener: **A good father listens, understands, and supports their children in times of joy or distress.**

MY FATHER IS ALWAYS MY HERO.

M.SADVIN- 1st class

MY MOTHER

My mother is the best

She never ever rests,

She works hard day and night

To make my future very bright

She teaches new things everyday

And there is always time to play

She is like a teacher to me

That is why I am not afraid to be me

One day when I will grow up

I would like to thank her

For never give up.

N. AASRITHA- 4th class

4.

DO NOT DESTROY THE EARTH

There are so many people who are ready to destroy nature. But there is no person to plant even a single plant. If it continues, our planet will be destroyed soon. Most people burn plastic materials and other waste wrappers this results in releasing carbon dioxide. When people breathe carbon dioxide, they will get affected by lung problems. Ultimately many people are dying due to the malfunction of their lungs. So, don't pollute the air. Please plant at least a plant. Even one plant can save many lives.

K.V.SAI MAHESWAR. 5th- class

RIDDLES

1) A city without houses, A sea without water
   (**Map**)
2) It has two legs and seven hands
   (Ladder)
3) It has no legs but it can go anywhere
   (Snake)
4) It is black in color, but it's not a snake, it is long but it is not a thread. What is that?
   (Braid)
5) It always comes down but never goes up
   (Rain)
6) It has legs but it doesn't have feet
   (Chair)
7) It will make a round with us all the world, and at last, it will sit in a corner
   (Slippers)
8) A snake that doesn't have at least one bone. But it is a best friend of farmers.
   (Earthworm)
9) Sometimes two policemen and sometimes three policemen will be there in a matchbox **(Peanut)**
10) white colored soldiers in a red cottage
   (Teeth)

SNEHALATHA- 6th class

GIFT OF GOD

A Teacher's role is very important in our society.

Teachers are the greatest gift of God who educates us

They are the backbone of our society

They give us knowledge

They help us to shape our life

Teachers are role models for students

They help in learning new skills

The teachers are like our second parents

They are also a source of inspiration and motivation

They are the ones that create a just society and a better world.

G. SRAVANI- 6th class

MY SWIMMING EXPERIENCE

Last summer my father told me that let's go for swimming?

Then I said OK. I am very much excited.

1st Day of Swimming: I take air tube along with me. I feared about water whether I can swim or sink then my uncle said don't fear about water, if you fear you will not swim. I overcome my fear through my uncle words. I went to swimming every day from 6 am to 8 am.

After 5 days: I did not fear about water and my uncle said to remove your air tube but my father said no no…… after a few days you can remove the tube. But my uncle said that he does swimming without air tube. I removed my air tube, I slowly started swimming and enjoying myself in water. It was refreshing my body and brain. I'm swimming without fear and I'm also doing yoga asanas.

Moral: "If we overcome from our fear, we can do miracles in our life".

PRAJAY-6th class

A TRIP TO SRISAILAM

"SRISAILAM" is one of the popular religious shrines of the country. It is visited by thousands of devotees throughout the year. Srisailam is located in the Nallamala hills of Kurnool district, Andhra Pradesh, at a distance of only 212 kms from Hyderabad. We had a trip to Srisailam Shiva Temple last week, it was an amazing experience. We traveled by own car from Hyderabad, and although there are buses available on a daily basis, but me and my friend preferred to have our own transport. From Hyderabad it took just 4 hours to reach there, of course, we stopped by at one place for refreshments.

We started to go to Srisailam during our winter break. I feared when we passed through a tunnel. After coming out of the tunnel. We got down at a station and booked a taxi. I was amazed to see, how the car would move up to the hill. After 30 minutes we reached Srisailam. And then we were finding where was our rooms we didn't know anything about Srisailam. After a while, we found a lodge and went there. We asked the manager for rooms. He said that one room for one day is Rs.1,000. We took four rooms. After the next day, early in the morning 5'o clock, we went to the temple in Srisailam. We wanted to go for a free Darshan. When we reached the temple, the free Darshana was late of 30 minutes. The policeman said, "The free Dharshan will begin at 9:30 AM. You can go and sit at a table". That was too late. So, my mom and dad decided to go to the free Darshan after 7:30 AM. The workers in the temple service the food from 7:30 to 8:00 AM. We ate that food and sat on a table. When we were playing, the keyman came at 8:30 AM and opened the gate. Slowly we came out of the temple and we moved to our rooms. My cousin said, "Shall we go to the dam?" We all were excited and went to the dam. We took flame photos there. After reaching our rooms we saw a 4-wheeled bike there. We rode that bike. I was very excited to ride that bike. Finally, we went to our rooms and came down with the luggage. At last, we tasted our last meal in Srisailam and left for our home.

P. Charan-6th class

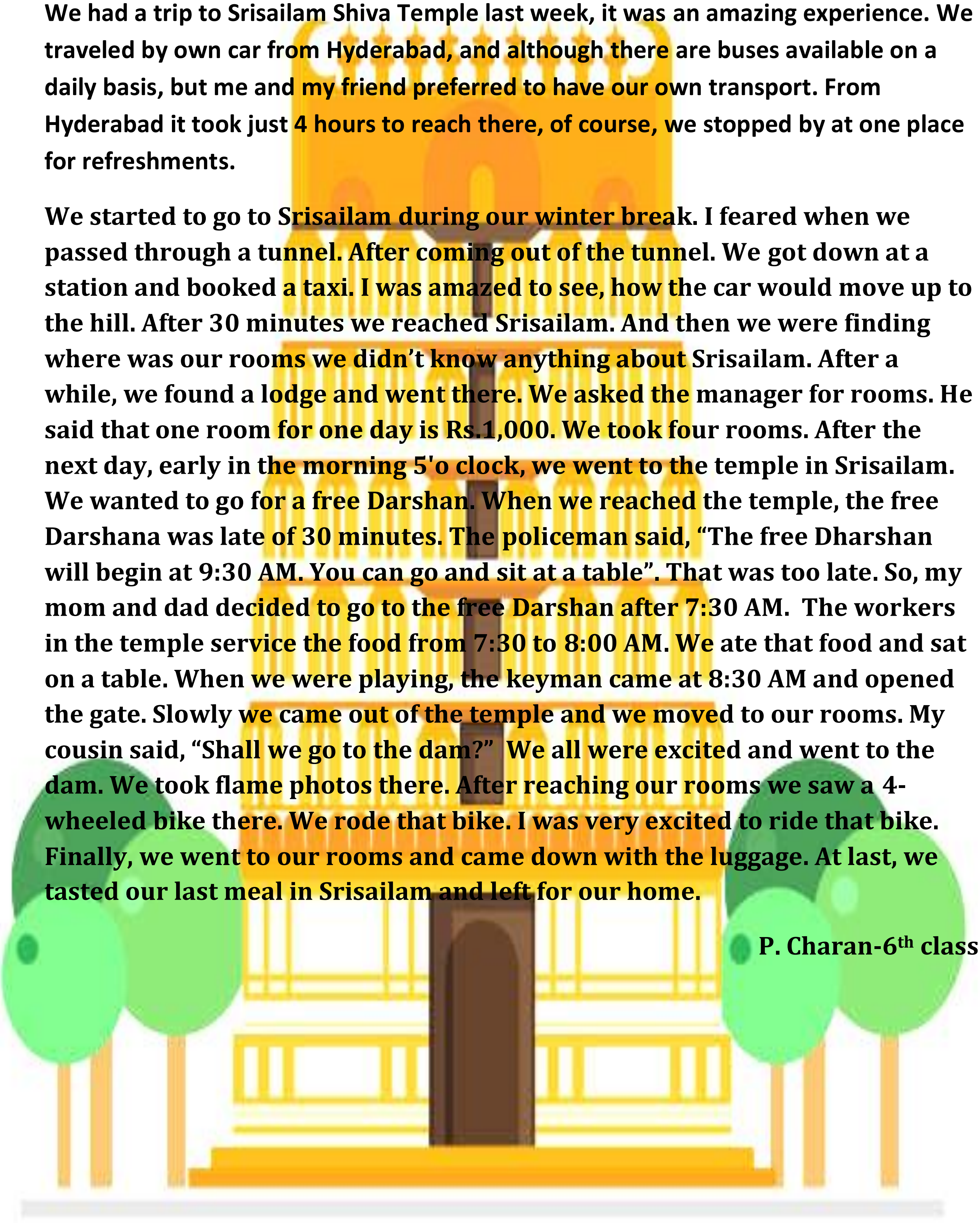

MY FIRST TEACHER

The time when I started to learn, my mother is my first teacher she taught me how to behave in th society, she taught me self-control and obedience, studies, sports and all. In my childhood I learnt music, I learnt piano and some songs from my mother. She is my everything. She struggled so much to teach me because of her busy schedule. She works as a Mahila police. My mother is my first inspiration; she is the most successful women ever I have seen. When she feels sick, she doesn't care about her health and she works from morning to evening. Once she felt very sick, then I decided to do all household works, on that day I understood how much hard it is to play the role of a mother. I could see how much work they do daily. From that day till today, I always help my mother. She taught me life struggles, hard work and success in my childhood. My mother is my first teacher. She has so many health problems but she tries her level best to overcome those problems and appears in front of me as a normal healthy person. I learned everything in my childhood from my mother. My mother is a teacher, supporter, and my first inspiration in my life. My mother is everything to me.

G. Manasvi- 7th class

THE PROS AND CONS OF ONLINE CLASSES

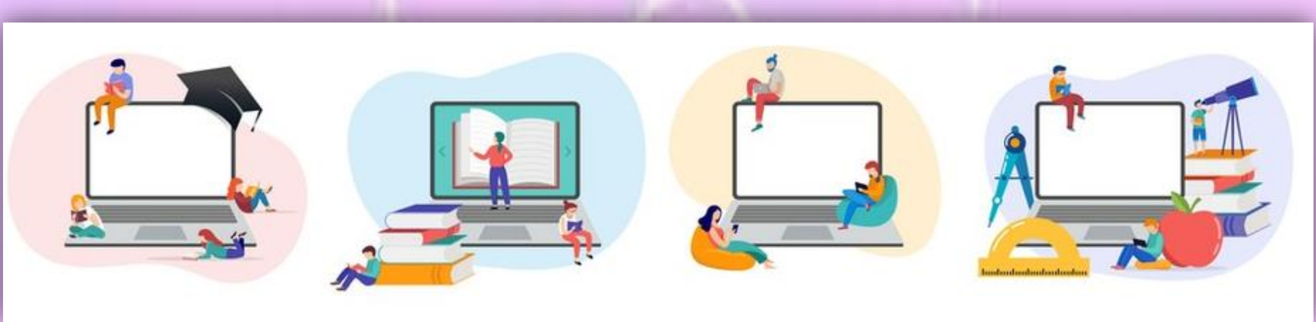

The widespread outbreak of Corona virus has led to moving towards online classes by school, colleges and coaching centers. Although these classes are able to mitigate the loss of studies to some extent, they have imposed some major concerns as well.

Online classes are available to students sitting anywhere in the world. It has eliminated the time and cost required to reach the school or college and prevented the loss of studies especially this year even though lockdown was imposed. Though students are trying to manage the studies, there are some major concerns. One of the biggest problems is that *Internet connectivity* is not proper in many places. So, students are not able to connect to classes. Another big problem is the lack of one to one teaching; due to it students find it very difficult to ask questions if they have doubts. Also, the overuse of electronic devices for studies has resulted in various health issues.

At present, both teachers and students have adopted this new model of education and are trying to get used to it with each passing day. If we can try to resolve the problems related to this model, it will be a big revolution in the coming years.

M.MANASWI- 7th class

Thank you...

SOME THINGS OR PEOPLE HELP US ACQUIRING KNOWLEDGE IN SCHOOL:

GATE: One comes with an empty mind and goes out with full of Knowledge.

BOOKS: I will help you to improve your knowledge.

TEACHER: We will help you to gain knowledge.

BLACKBOARD: I might be black but I am affective in giving knowledge.

ERASER: I give a chance to rectify or correct mistakes.

BELL: I replace the watch.

PRINCIPAL: Who manages all the activities in the school.

So, this tells that the people and the things in the school which helps in acquiring knowledge.

N. SANKEETHANA- 7th class

DREAM ROOM

I always wondered
What makes my dream room?

A flower over my head
A window behind my bed

A wall holding my memories
A shelf holding my stories

A table with my books
A wardrobe with my clothes

Oh, now I realize that I'm in my dream room.

ASMA KOUSAR- 8th class

MOTIVATIONAL THOUGHTS FROM MY MOM

- **When I wake up in the morning: she says: --**

  "Here is a new day, make it special"

- **When my face is not good: she says: --**

  "Beautiful heart is important than a beautiful face"

- **Whenever I cry: she says: --**

  "Smile is the best medicine for any problem" so smile!

- **When I share my chocolate to my brother: she says: --**

  "Everything you do, come backs to you"

- **Whenever I lose my confidence: she says: --**

  "Be confident, confidence may not bring the success but it helps to achieve the success"

- **When I expect something from someone: she says: --**

  "Don't expect anything, because it always ends with experience"

- **When I am ready to go to bed: she says: --**

  "My dear sweet heart, every day is a challenge, you have completed a challenge today".

So, recharge yourself now............

P.SAI AKSHAYA SRI– 7th class

Theory of Karma.

India is one of the biggest countries in population in the entire world. Most probably Indians believe, follow, and depend on the Theory of Karma (KARMA SIDDANTAM) is as follows: -

- One day, when a school boy was returning from his school, initially his eyes look at the fruit on the tree and having desire to pluck it but unable to pluck with eyes.

- Due to that both legs went to that tree, but the legs couldn't pluck the fruit.

- In turn both hands plucked the fruit, but the hands couldn't eat it.

- Therefore, the mouth ate the fruit, but the mouth couldn't keep in the mouth. And it went to stomach and digest.

The gardener noticed the same and caught hold of the boy and beat on his back indiscriminately. At last tears release from eyes.

MORAL: - Initially the eyes desire is greediness, as a result, tears released from eyes with sorrow.

As per the greedy desire of eyes as to pluck fruit, whereas parts of body have their share of work done by them. Finally, the punishment goes to eyes.

G. SANTHI PRIYA- 8th - Class

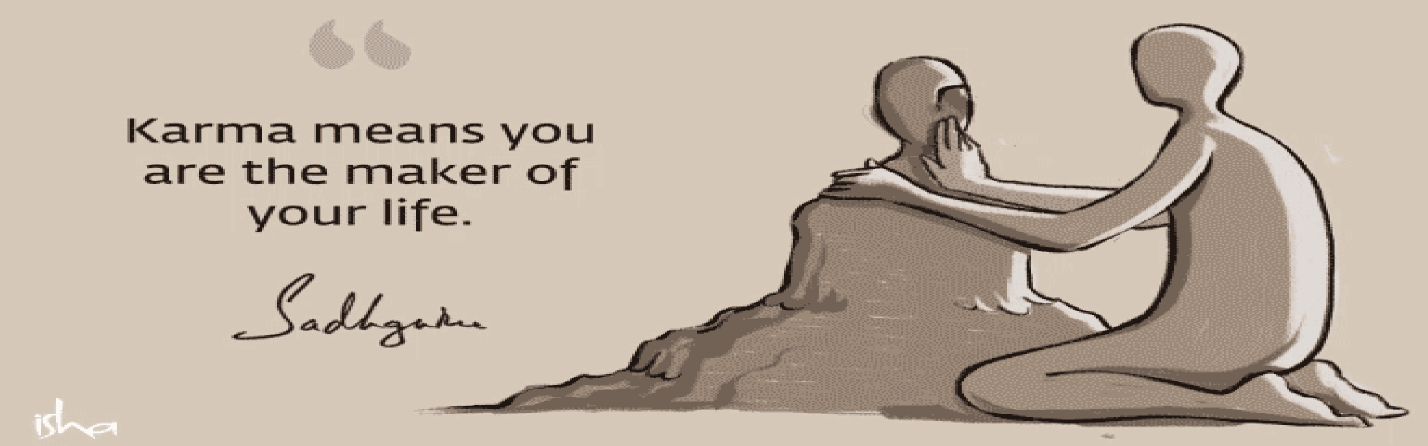

Karma Innisfail

MY MOTHER

I love my mother
I love her forever

My mother is my hope,
My mother is my love,
My mother is a star which shines above.

My mother is my treasure,
My mother is my future.
I love my mother,
I love her forever.

My Mother is the best,
She never takes a rest.
My mother is a teacher,
She is my preacher.

My Mother never takes rest,
She works day and night.
My mother is my queen,
My mother is my dream.

I love you Amma.

GURUNAVEEN-8th class

A SELFLESS MIND OF A GIRL

Girl of about 15 years she wanted to become a scientist in ISRO she is so intelligent and genius and good nature girl she achieved her dream job and work day and night so hard later she came to the highest position one day she came to know that the Earth is going to be destroyed by the changes happening in the sun and in the earth as well this news collapsed her because the whole people are going to face the consequences she started to think for the solution she got an idea to find out another planet which resembles the Earth then she formed a team and started a research to reach the planet which they newly found the team invented spaceships and advance rockets to reach the planet they named the planet as titan she manage to send a lot of people but unfortunately she can save only two countries of people and in this research process she doesn't even care her health and died when she is getting in the rocket when the people know about this they were all in shock and they felt very sad for the girl and became to know that that kindness is the important thing which they needed in the life and they decided to stop worshipping other gods who they don't see and started to worship her who they saw and her helping Nature and her sacrifice for them and live the life happily without any other bad habits

Shobhitha-8th class

THE MONKEY AND THE DOLPHIN

Once, a group of sailors set out to sea in their sailing ship. One of them brought his pet monkey along for the long journey. When they were far out at sea, a terrible storm overturned their ship. Everyone fell into the sea and the monkey was sure that he would drown. Suddenly a dolphin appeared and picked him up. They soon reached the island and the monkey came down from the dolphin's back. The dolphin asked the monkey, "Do you know this place?"

The monkey replied, "Yes, I do. In fact, the king of the island is my best friend. Do you know that I am actually a prince?"

The dolphin knew that the island was isolated. She said, "So you are a prince! Now you can be a king too!"

The monkey asked, "How can I be a king?"

The dolphin went away, saying, "As you are the only creature on this island, you will naturally be the king!"

Moral: Fake Pride Brings Pain

Ali Imran- 8th class

MOM

The cloud can stop showering

The sun can stop shining

But a mom cannot stop sharing.

Mom is a three-letter word

But it makes one's life

It is mom alone

With whom we share our Joys.

Mom is a river

Which is flowing on forever

Mom is a rainbow

Which glows everyday

She is like a tree

Which goes growing ever

Mom is a precious thing

Be ready to sacrifice for it

Never try to break it

Mom is a boon of our life

Which we don't get every time.

Sravanthi- 8th class

NATURE IS

Nature is a great teacher.

There are many things around us. We can learn lessons from our surroundings. If you want to learn things, first of all you have to learn how to see and observe.

Ant tells us the secret of hard work.

Plant tells us how to move forward by overcome all the abstractions.

Butterfly tells us to accept ugliness; beauty is behind that.

Spider tells us do not stop your efforts until reach the success.

Fire tells us do not be proud, water makes fire calm down.

Dog tell us to show immense love and affection.

If you observe carefully everything around us make you a happiest human being in the universe. So being a human you have to respect your nature. because it is our Guru.

Nithya Sai Lakshmi. class 8th

THE BEST TEACHER

My Grandmother (Nani)

My Grandmother is the best,
Cause she never refuse my request,
Despite of getting education,
She knows to deal with situation,

My Grandmother is the best,
Cause she never refuse my request,
She never bought a car,
But she shines like a star,

She struggled a lot and burnt,
To make her children learnt,
She gives everything in her turn,
And, never asks for a return,

She always stood up strong,
When she wasn't wrong,
She paves the way for a lovely family,
Where we can live so happily,

My Grandmother is the best,
Cause she never refuse my request,
She's the one to sow the moral seed,
By which, we could now

Get an ethical reap,
I owe to the mothers and their mothers,
Who sacrifices all, for the sake of ours.

Thank you

SK. NAZEEM - 9th class

``My School”

KENDRIYA VIDYALAYA

Kendriya Vidyalaya is a central school. This organization started with 20 regimental schools in 1963. As of 2023, there are total of 1,253 schools in India and three abroad. Commonly, there are 4 houses in every KV school, which represent the prominent figures in Indian history. Those are Shivaji, Tagore, Ashoka and Raman. The names of these prominent historical figures serve as an inspiration to the students of Kendriya Vidyalaya and encourage them to learn more about Indian history and culture. The school aims to instill a sense of pride and patriotism among its students and to promote a holistic education that includes academic excellence as well as character building.

Kendriya Vidyalaya Kandukur

Kendriya Vidyalaya Kandukur is located in Kandukur. It is in the district of SPSR Nellore. And it is under Ongole cluster. This school is started in the year of 2019. During the year 2019 there were only five classes, from 1^{st} to 5^{th} and at present there are nine classes from 1^{st} to 9^{th}. Up to now and only few more months we are going to stay in this building which is taken under a rent building and our new building is under construction and it will be handed over to us in May. There are totally 19 teachers, 1 principal, 3 security men,a and 2 house keepers. And in this school, there are 9 class rooms + 2 dining halls + boy’s washrooms + girl’s wash rooms + 2 store rooms + 1 medical room + 1 staff room + 1 library + 1 science lab + 1 sports room + 1 principal room + 1 computer lab and etc.… and finally I want to say I am proud to be a kvian …

Fayees – 9^{th} class.

Repent

Do the dreams reveal our future?

Can the dreams help us to correct our life?

Certain doctors have found that one's dreams often reveal a great deal about one's problems and that, if understood correctly, they can provide a key to the solution of those problems. Edward Thomas said that dreams are the medium between God and human being; God will reveal his views and the tasks to be done in the future.

On 1st dec.2023 a terrible dream occurred in my sleep; I was in a vast land of desert. No tree, no shelter, and no refuge that I could find as long as I can see in the desert. Everyone was enjoying in the desert by singing, playing and chit-chatting with their friends and family. As everyone was accompanied by others, I was also sitting with a Saint in that desert. We both were sitting and talking about a marriage we attended that morning.

As we were talking, we heard a loud shriek from a distance. We looked at the direction where the screams were coming from. I could see a helicopter throwing arrows at people sitting in the desert. The arrows were very large and big in the size. The moment the arrow fell on the person the very moment he was losing the life. **Thanatophobia** captured my mind. Many thoughts were overflowing in my mind, I thought of running far away from that place but the shooters were targeting the people who were running. So, I quit my thought of running and sat still in my place without moving. I could no longer think of death which was approaching me. I don't have guts to face my death knowingly. Being a theist, I believe in the 'Heaven' which is a permanent, eternal divine reward reserved for those who lived morally upright in their earthly life, whereas 'Hell' is a permanent, eternal divine punishment for those who have committed moral transgressions (bad behaviors). At that moment, I was astonished by a wonderful thing. Regardless of everyone who was scaring of death, I could see a person sitting beside me whose mind was still and calm without fear. He was a Saint. I asked him with an astonishment, "HOW ARE YOU FEARLESS? DON'T

YOU AFRAID OF YOUR DEATH?". Then he replied. "I will be in the kingdom of god, if I die". That was heaven. "Instead of suffering in this sinful earthly world, it's better to die and enter into the god's kingdom (Heaven), the place where there is no pain or suffering" He continued. I realized that he was so sure that he will lead a happy life, even after his death. But I don't have that assurance. Therefore, I bent down with my head in the knees due to the fear of approaching the death, I was pleading God to spare me to correct myself. I was requesting God in my prayer that no arrow should fall upon me. After struggling for a while, that dream had departed me as I woke up from my sleep. And I ascertained that god has given me a chance to correct myself.

Finally, I said thanks to God.

Satyakanth. G (TGT. Eng.)

Blossoming Minds

Children in the school are like flowers in the garden,

They flourish and grow with every lesson.

They learn and revel with joy and wonder,

They make friends and share their laughter.

Children in the school are like lights in the dark,

They glow and show with every spark.

They shine and illuminate with knowledge and curiosity,

They guide and educate with vision and clarity.

Children in the school are like waves in the sea,

They flow and go with every free.

They swim and explore with adventure and confidence,

They splash and adore with fun and gratitude.

MADHAVI PALAGANI

(Primary Teacher)

Dear Reader,

I am happy to have availed the opportunity of writing this article, I would like to share my views with all those who go through this magazine. Teaching is an art of awakening the natural curiosity of young minds for the purpose of satisfying it afterwards. It is my cherished desire to express my experience through a message in the magazine. I am fortunate to have got it.

Constitution of India: An Instrument of Social Change

A constitution is a set of fundamental rules that determine how a country or state is run. Almost all constitutions are "codified", which simply means they are written down clearly in a specific document called "the constitution".

When a question is asked to the Indian students, "Why do you observe 26 January since 1950 as the Republic Day?" It then follows with an obvious answer, "The Constitution of India came into effect on that momentous day". The term 'Republic Day' thus used to overshadow the term 'Constitution'. Perhaps that was sincerely felt by some for which 26 November is being observed as the 'Constitution Day'. In 1949 the Constitution of India was adopted, enacted and given to the people of India. The Government of India declared 26 November as Constitution Day / Samvidhan Divas on 19 November 2015 by a gazette notification. The Prime Minister of India Narendra Modi made the declaration on 11 October 2015 while laying the foundation stone of Dr. B. R. Ambedkar's Statue of Equality memorial in Mumbai and 125th birth anniversary of the architect of constitution, Dr B R Ambedkar.

Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar is called the father of the Indian Constitution because he was a part of the drafting committee, which took 2 years, 11 months, and 18 days to draft the Indian Constitution. It is the longest constitution in the world. Constitution has 448 articles in 25 parts

and 12 schedules, has made 105 amendments as on now. The Indian constitution

contains provisions of more than 60 countries constitutions. It helps to serve as a set of rules that all the people of the country mutually agree upon to abide by.

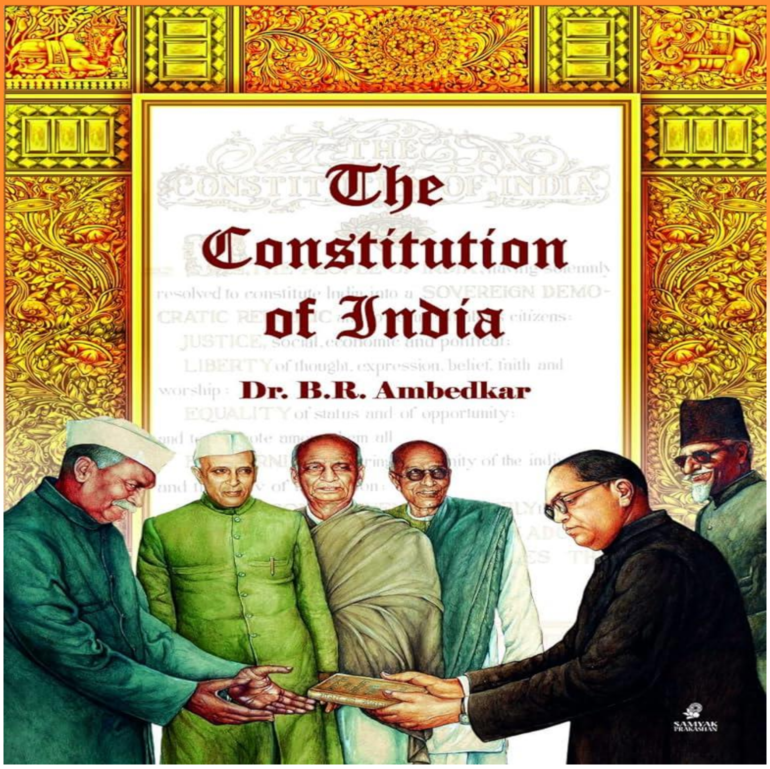

Some of the key features of Indian constitution

1) The Preamble of the Indian Constitution
2) Federalism: - Power division between union and state.
3) Parliamentary form of Government: - Government by the people.
4) Separation of powers: - Between Legislature, Executive, and Judiciary.
5) Secularism,
6) Fundamental Rights

The constitution declares India a sovereign, socialist, secular, and democratic republic, assures its citizens justice, equality, and liberty, and endeavors to promote fraternity. The responsibility lies on not only the jurists and policy framers, but also the citizens of the country to work in a harmonious manner for the development of the country.

MANOHAR.K. TGT(SST)

©peacockride

The Constitution of India

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA,
having solemnly resolved to constitute India into a
SOVEREIGN SOCIALIST
SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC
and to secure to all its citizens:

©peacockride

JUSTICE, social, economic and political;
LIBERTY of thought,
expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity;
and to promote among them all
FRATERNITY assuring the dignity of the
individual and the unity and
integrity of the Nation;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY
this twenty-sixth day of November, 1949, do
HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO
OURSELVES THIS CONSTITUTION.

©peacockride

Overview of the Indian Armed Forces

The Indian Defence Force is the fourth largest military force in the world, consisting of a total of 5132000 soldiers. It comprises three branches: The Army 🏹, the Navy ⚓, and the Indian Air Force ✈.

The Indian Army was founded in India on April 1st, 1895. Its acronym stands for "Alert Regular Mobility Young," and its founder is Stringer Lawrence. The army's motto is "Sevo Paramo Dharma. "

The Indian Navy was established in India on September 5th, 1612. Its acronym stands for "Nautical Army of Volunteer Yeomen," and its founder is Chatrapati Shivaji Maharaj. The navy's motto is "Sam No Varunah."

The Indian Air Force was established on October 8th, 1932, and its motto is "Touch the Sky with Glory." Its founder is Subroto Mukherjee.

India has several Special Forces, including commandos such as Marcos Commando, Para Commando, Garuda Commando, and NSG Commando. India is training 10,000 eagles to take down enemy drones. This force is called the Eagle

Force. When it comes into action, the Indian army will become the strongest in the world.

. The Indian Navy's Marine Commando, also known as the Marcos Commando, is a special force trained to fight from sea, air, and land. Marcos was founded in February 1987.it is Considered one of the most dangerous commando forces in the world. They undergo rigorous training, which is so demanding that only 4,000 commandos are currently serving in the Indian Navy. Marcos Commandos are known to be **deadlier than alligators, with one commando capable of killing alligators without any weapons.**

The Indian Army Para Commandos, also known as the RED DEVILS, are considered one of the best Special Forces in the world. They are trained for highly classified missions and skilled in various techniques, including accurately shooting by using the reflection in a mirror or the surface of water. After completing their training, elected Commandos participate in a glass-eating ritual in this Para Commandos will drink wine from a glass and they will eat the glass.

Garuda Forces, a special force within the Indian Air Force. This group uses the best weapons available in India and is considered one of the country's best forces. Their primary responsibilities include securing air bases, protecting Indian air space, and supporting ground operations. The Garuda Force's motto is "Offence is the Best Form of Defence".

The National Security Guard (NSG), also known as Black Cat commandos, is a Special Forces unit primarily used in anti-hijack operations, and finding the bomb and dismantling the bomb. They Provide support to the Central police force. Within the NSG, they are highly skilled in driving at high speeds. They are capable of driving a car at 120 km per hour even in reverse gear.

N. Atchuth kumar-9th class

THE SOLITARY DANCER

Once they lived a family consisting of father mother and two daughters they decided to move to a new house which was huge all day the daughters played in the house and at night they slept with their parents the house seemed old but they were happy one day the first daughter was playing in the lawn she had some strange sound from the ceiling she got suspicious at first ignored but sound was repeating again and again she went to her bedroom and sat thinking what it was suddenly her sister came to the room eating a bowl of popcorn the second order sister thinking and she asked what happened?

Daughter 1: nothing I am just thinking about the noise.

Daughter 2: what noise?

Daughter 1: noise coming from the ceiling in that room.

Daughter 2: I am just coming from there. There was no noise.

(Both went to check the ceiling)

There was no noise but there was a rope hanging to the ceiling they got curious and pull the rope and got surprise to see stairs which were leading to the attack on top of the house they followed the stairs and the end up in a room the room was like a dance room and at the end they saw a radio. They understood it was a secret room used for dancing. They were scared to explore the room alone show the rust to the room and sat on the bed thinking they thought of some supernatural there is that there is a ghost in the room and it is dancing from the radio they named it theory of the 'solitary dancer'. At night when everyone was sleeping at 3:00 a.m. daughter 1 woke up to the same noises that were coming from the attic she turns to tell her sister and parents about the noise but they were not there on the bed she got afraid and went to the attic it was glowing she pull the rope and went up to see her family enjoying the radio and decorating the room she was a stone is to see her family doing this everyone told happy birthday.

daughter 2: it was all for your birthday party no dancer is inside here it was our plan to celebrate here.

Daughter 1: you fool I was afraid but thank everyone for this beautiful surprise

Aahil-9th class

A to Z in Life

To Achieve Your Dreams, Remember Your A to Z

A: Ability B: Boldness C: Civility

D: Daring E: Enthusiastic F: Faithfulness

G: Generosity H: Helping nature I: Introspection

J: Just K: Kindness L: Love

M: Modern N: Nobility O: Optimistic

P: Positive Q: Quest R: Readiness

S: Stability T: Talent U: Understanding

V: Vigilant W: Workaholic X: Exemplary

Y: Youthful Z: Zeal

Mr. Thirumala Rao- PRT

शैक्षणिक गतिविधियाँ

वार्षिक शैक्षणिक पैनल निरीक्षण - जुलाई 2023

हिंदी पखवाड़ा 14.09.2023 से 29.09.2023 तक मनाया गया

केन्द्रीय विद्यालय कंदुकूर
KENDRIYA VIDYALAYA KANDUKUR

स्वच्छता पखवाड़ा

01.09.2023 से 15.09.2023 तक

BEFORE
AFTER

सहायक आयुक्त, केविएस, (आरओ) हैदराबाद द्वारा निरीक्षण- 27.10.2023

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 28 अक्टूबर से 2 नवंबर 2023 तक

सतर्कता जागरूकता सप्ताह
VIGILANCE AWARENESS WEEK

14.11.2023 को बाल दिवस मनाया गया

केन्द्रीय विद्यालय कन्दुकूर
KENDRIYA VIDYALAYA KANDUKUR
बाल दिवस
14 नवम्बर
14th NOVEMBER
FIT INDIA

केन्द्रीय विद्यालय कन्दुकूर
KENDRIYA VIDYALAYA KANDUKUR
बाल दिवस
14 नवम्बर
14th NOVEMBER
FIT INDIA

20.11.2023 को विद्यालय स्तर पर राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया

The Brain

21.11.2023 को जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया

संविधान दिवस -26.11.2023

अक्टूबर माह में अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित की गई

29 नवंबर 2023 को चिकित्सा जांच की गई

CHINA

KV Kanduk
Medical Che
29-11-20
We heartly welco
Sri. Stella Karuna

15.12.2023 को 60वां केविएस स्थापना दिवस मनाया गया

केन्द्रीय विद्यालय कंदुकूर
KENDRIYA VIDYALAYA KANDUKUR
KVS FOUNDATION DAY
CELEBRATIONS
FIT INDIA

FIT INDIA

वार्षिक खेल दिवस 22.12.2023 को मनाया गया

खेल दिवस
ORTS DAY

वार्षिक खेल दिवस की झलकियाँ

खेल दिवस
SPORTS DAY
1
2
3

क्रिसमस उत्सव - 24.12.2023

केन्द्रीय विद्यालय कन्दुकूर
KENDRIYA VIDYALAYA KANDUKUR
INDIA

केन्द्रीय वि
KENDRIYA VIDY

वीर बाल दिवस समारोह
24.12.2023

KENDRIYA VIDYALAYA
Veer Bal Diwas

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन

11.01.2024 से 17.01.2024 तक

केन्द्रीय विद्यालय
KENDRIYA VIDYALAYA
KANDUKUR - PRAKASAM (Dt) - 523105

KENDRIYA VIDYALAYA
ROAD SAFETY WEEK

परीक्षा पे चर्चा -23.01.2024,
चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी

गणतंत्र दिवस समारोह - 26.01.2024

REPUBLIC DAY

REPUBLIC DAY CELEBRATIONS
26th January

प्राथमिक स्तरीय छात्रों द्वारा सह पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ

SEMINAR ON
MILLETS FOR

Class:- 1st
FUNDAY
तारीख: 19.08.2023
दिन: शनिवार

2023/08/19 14:40

CO-CLASS TEACHER-UJWALA
DATE-18-11-2023
DAY - SATURDAY
CLASS-I
TOTAL STARS-34
SHINING STARS-30
HIDING STARS-04

FAMILY TREE
2023/09/26 09:30

सामुदायिक दोपहर का भोजन

धन्यवाद